भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 245 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | सोमवार 30 अगस्त 2021 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

स्थायी सुख, शान्ति व निर्भय वातावरण के लिए ''क्रियायोग अभ्यास करें'' सत्य की अनुभूति में सभी प्रकार के क्लेश हमेशा के लिए दूर हो जाते हैं। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि क्रियायोग के द्वारा हम सत्य से जुड़ जाते हैं। ज्ञान, शक्ति, शान्ति, आनन्द, नाम-यश, धन आदि के लिए मनुष्य को दर-दर भटकना पड़ता है, और प्राप्त न होने पर मनुष्य में हिंसक प्रवृत्ति प्रकट होती है। क्रियायोग में भक्ति दृढ़ होने पर ज्ञान, शक्ति, शान्ति,आनन्द, धन आदि सब कुछ स्वयं मनुष्य के पास आ जाते हैं।

क्रियायोग प्राचीनतम् एवं नित्य नवीन पूर्ण विज्ञान है। ईश्वरीय नियमों के अनुसार कलिकाल में क्रियायोग का ज्ञान विलुप्त हो गया। आरोही द्वापर युग के आते ही मृत्युंजय अमर गुरु श्री महावतार बाबा जी द्वारा क्रियायोग को पुनर्जीवित कर पुनः परिष्कृत किया गया। उन्नीसवीं शताब्दी में महावतार बाबाजी ने क्रियायोग को लाहिड़ी महाशय जी के माध्यम से मानवजाति को दिया। क्रियायोग ही सनातन धर्म में वर्णित यज्ञ है। क्रियायोग ही वेदपाठ है। क्रियायोग अभ्यास से मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप ''अहंब्रह्मास्मि'' की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्
क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान
प्रयागराज
10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

चुपचाप नहीं बैठा है भारत, तालिबान की हर फितरत से है वाकिफ, अफगान संकट पर पर्दे के पीछे से कर रहा काम

नई दिल्ली (एजेंसी)। काबुल पर तालिबान के कब्जे के बाद भारत अफगानिस्तान संकट को लेकर चुपचाप नहीं बैठा है। वह पर्दे के पीछे से अपना काम कर रहा है। काबुल एयरपोर्ट पर हमले के बाद भारत आतंकवाद को लेकर तालिबान पर कूटनीतिक दबाव बढ़ाएगा।

भारत अफगानिस्तान में बनने वाली नई सरकार के स्वरूप को लेकर भी विभिन्न देशों के संपर्क में है, जो चाहते हैं कि अगर वहां सरकार का समावेशी स्वरूप नहीं होता है तो तालिबान को मान्यता नहीं देना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अफगानिस्तान के

मसले पर एक और बैठक आहूत करने पर भी चर्चा चल रही है। इसका मकसद भी तालिबान पर कूटनीतिक दबाव बढ़ाना है। सूत्रों का कहना है कि काबुल में हुए आतंकी हमले के बाद दुनिया के तमाम देश सतर्क हो गए हैं। हालांकि, आतंकी हमले की जिम्मेदारी आईएस खुरासान ने ली है। लेकिन तालिबान की स्थिति आतंकी गुटों से गठजोड़ को लेकर संदिग्ध बनी हुई है। भारतीय एजेंसियों के इनपुट से स्पष्ट है कि अफगानिस्तान में सक्रिय तमाम आतंकी गुटों की तालिबान लड़ाकों से सांठगांठ है। इनको संरक्षण और खुराक पाकिस्तान की आईएसआई से मिलती है।

सूत्रों के मुताबिक तालिबान दुनिया के सामने उदारवादी चेहरा पेश करने की कोशिश कर रहा है। लेकिन भारत तालिबान के मूल आचरण को 1996 से ज्यादा अलग नहीं देखता। भारत सहित अन्य देश तालिबान के एक्शन पर नजर बनाए हुए हैं। वे एक दूसरे के सम्पर्क में भी बने हुए हैं। तालिबान के नए अमीरात की मान्यता के संबंध में फैसले को लेकर भारत का कूटनीतिक दबाव काम आ रहा है। रूस और ईरान जैसे देश भी इस संबंध में भारत से रायशुमारी में जुटे हैं। भारत की अमेरिका के अलावा रूस, ईरान, कतर, तजाकिस्तान, जर्मनी, इटली सहित कई देशों से बातचीत हुई है।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह बोले- अफगान में बदलते हालात भारत के लिए चुनौती, रणनीति पर दोबारा सोचने को मजबूर

नई दिल्ली (एजेंसी)। अफगानिस्तान में तालिबान के कब्जे के बाद से ही इस बात को लेकर कयास लगाए जा रहे हैं कि भारत की रणनीति इसको लेकर क्या होने वाली है। इस बीच केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा है कि अफगानिस्तान में बदलते समीकरण भारत के लिए चुनौती हैं और 15 अगस्त को तालिबान के कब्जे के बाद भारत सरकार अपनी अफगान नीति पर दोबारा विचार करने के लिए मजबूर हैं। राजनाथ सिंह ने कहा, 'अफगानिस्तान में बदलते समीकरण

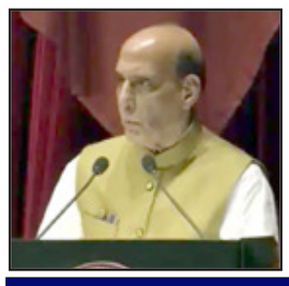

हमारे लिए चुनौती हैं। इस स्थिति ने हमारे देश को अपनी रणनीति पर दोबारा विचार करने को मजबूर कर दिया है। हम अपनी रणनीति बदल रहे हैं और 'क्वॉड' का गठन इस रणनीति को रेखांकित करता है। राजनाथ सिंह ने यह भी कहा, 'रक्षा मंत्रालय एकीकृत युद्ध समूहों के गठन पर बहुत गंभीरता से विचार कर रहा है।

इसरो को गगनयान मिशन में मिली बड़ी कामयाबी, एसडीएम का हॉट टेस्ट सफल

चेन्नई (एजेंसी)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने गगनयान सर्विस मॉड्यूल प्रोपल्शन सिस्टम के सिस्टम डिमॉन्स्ट्रेशन मॉडल (एसडीएम) का पहला हॉट टेस्ट सफलतापूर्वक कर एक बड़ी कामयाबी हासिल की है। इसरो के मुताबिक तमिलनाडु के महेंद्रगिरि में इसरो प्रोपल्शन कॉम्प्लेक्स (आईपीआरसी) में शनिवार को 450 सेकंड की अवधि के लिए यह हॉट टेस्ट किया गया। सिस्टम ठीक तरीके से काम कर रहे हैं। इसके अलावा अलग-अलग स्थितियों में ऐसे कई परीक्षण करने की योजना बनाई गई है। इसमें परिस्थितियां भी अलग-अलग रखी जाएंगी। इसरो ने बताया कि सर्विस मॉड्यूल (एसएम) गगनयान ऑर्बिटल मॉड्यूल का हिस्सा है और क्रू मॉड्यूल के नीचे स्थित है और री-एंट्री तक इससे जुड़ा रहता है।

खबर संक्षेप

पथ प्रदर्शक समिति द्वारा क्रॉफ्ट प्रदर्शनी का आयोजन आज, बच्चे दिखायेंगे प्रतिभा

फूलपुर। कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर पथ प्रदर्शक समिति द्वारा इस्माइलगंज के केशव नगर स्थित शिवनायक (शिवाला मंदिर) में शाम सात बजे क्राफ्ट प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। प्रदर्शनी में बच्चे खुद के द्वारा बनाए गए आर्ट एवं क्राफ्ट के द्वारा अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करेंगे। यह जानकारी एबीवीपी कार्यकर्ता एवं पथ प्रदर्शक समिति के सदस्य विशाल कुमार सत्या संस्थापक/प्रबंधक राय साहब केसरी ने दी है।

धूमधाम से मनाया जाएगा श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

शंकरगढ़। 30 अगस्त को श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया जाएगा। पूरे जनपद में अलग-अलग स्थानों पर विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। कोविड प्रोटोकाल का पालन करते हुए झांकियां भी सजाई जा रही हैं। इसी क्रम में शंकरगढ़ के शिवराजपुर, लखनपुर में स्थित राधाकृष्ण मंदिर पर भी पूरी भव्यता के साथ जन्मोत्सव मनाने की तैयारी है। आयोजक राजगोपाल पाल ने बताया कि समारोह के चीफ गेस्ट शिवलाल पाल प्रधानाचार्य और ज्ञानेंद्र कुमार मिश्र प्रधान बेनीपुर विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लेंगे।

ट्रैक्टर की चपेट में आने से बाइक सवार युवक की मौत, दूसरे की हालत गंभीर

शुकुलपुर प्रभु मोड़ पर ट्रैक्टर की चपेट में आने से बाइक सवार की मौत का दृश्य।

अखंड भारत संदेश

हंडिया। हण्डिया कोतवाली क्षेत्र के शुकुलपुर के समीप प्रभु पुर मोड़ पर एक ट्रैक्टर की चपेट में आ जाने से युवक की दर्दनाक मौत हो गई। वहीं साथ में रहा साथी गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया तथा घायल युवक को इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेज दिया। गुलौरी थाना गोपीगंज निवासी राजेश यादव उम्र 30 वर्ष पुत्र रमापति जो गांव के ही राम कैलाश पुत्र विसरत निवासी उपरोक्त के साथ रविवार को उसकी बहन के घर जगदीशपुर हण्डिया जा रहे थे। जैसे ही 1 बजे दोपहर के लगभग हडिया थाना क्षेत्र के प्रभु पुर मोड़ पर पहुंचा ही था कि पीछे से आ रही तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने बाइक सवार को रौदते हुए ट्रैक्टर लेकर फरार हो गया। वहीं दुर्घटना में राजेश यादव की मौके पर ही मौत हो गई। वही साथ में रहा साथी राम कैलाश गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने परिजनों को सूचना देते हुए शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया। वहीं घायल बाइक चालक राम कैलाश को इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हण्डिया भेज दिया। दुर्घटना में बाइक पूण रूप से क्षतिग्रस्त हो गई।

आकाशीय बिजली गिरने से सुलझा व्यक्ति मकान की दीवार फटी

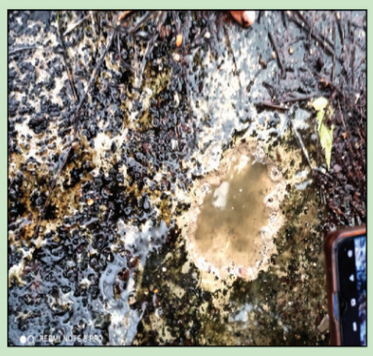

सिरसा/मेजा। मेजा क्षेत्र में आकाशीय बिजली गिरने से एक व्यक्ति झुलस गया और एक मकान की दीवार फट गई। बता दें कि मेजा तहसील क्षेत्र के कोना गांव मे रविवार को शाम 5 बजे के करीब हुई रिमझिम बारिश व बादलों की गड़गड़ाहट के बीच डॉ कमला शंकर द्विवेदी के घर पर आकाशीय बिजली गिर जाने के कारण उनके घर की दीवाल फट गई। वहीं दौ सौ मीटर की दूरी पर आकाशीय बिजली गिरने से प्रभाष चंद पांडे पुत्र राजाराम पांडे का हांथ झुलस गया। जिन्हें प्राथमिक उपचार के लिए नजदीकी डॉक्टर के पास ले जाया गया।

प्रतापपुर में ट्रांसफार्मर जलने से किसान एवं व्यापारी परेशान

प्रतापपुर। विद्युत उपकेंद्र बरेस्ता कला से संबंधित भोगवारा तिराहे का ट्रांसफॉर्मर चार दिनों से जला है जिसके कारण गाँव सहित बाजार की सैकड़ो दुकानों की बिजली गुल होने से उमस भरी गर्मी में बिना बिजली के लोगो का जीना मुहाल हो गया है।साथ ही दो प्राइवेट नलकूपों का संचालन बंद होने से धान की सिचाई बाधित है।इसकी सूचना विद्युत विभाग के अधिकारियों को दी गयी बावजूद जिसके अब तक ट्रांसफार्मर बदला नही जा सका है।जिसके कारण खेती का कार्य पिछड़ रहा है साथ ही ग्रामीण और व्यपारियो का भी विद्युत विभाग के प्रति बढ़ रहा है।क्षेत्र के पंकज पांडेय, सत्यकान्त, अशोक कुमार, पुनीत मिश्रा आदि ने बताया की बिजली विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के उदासीनता के चलते लोगो को काफी परेशानी हो रही है।उपभोक्ताओं ने विद्युत अवर अभियंता से अविलंब ट्रांसफॉर्मर लगाने की मांग की है।किसान एवं व्यापारी परेशान

न्यूज झरोखा

मन की बात सुनने को उमड़ी कार्यकताओं की भीड़

बारा विधायक ने भी बढ़ाया सभी का हौसला

शंकरगढ। रेडियो पर प्रसारित होने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम की लोकप्रियता में धीरे-धीरे इजाफा होता जा रहा है। पहले यह कार्यक्रम लोग उत्सुकता में सुनते थे। अब यह स्थिति धीरे-धीरे बदलने लगी है। लोग, मन की बात कार्यक्रम का इंतजार करने लगे हैं। इसी क्रम में रविवार को बारा विधानसभा के लोगों ने मन की बात कार्यक्रम का सीधा प्रसारण सुना। आमजन के साथ भाजपा कार्यकताओं ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। आमजन और कार्यकताओं में जोश भरने के उद्देश्य से स्थानीय विधायक डा. अजय कुमार भी मन की बात कार्यक्रम का प्रसारण सुनने के लिए सेमरा कल्बना पहुंच गए। बारा विधायक डा. अजय कुमार ने प्रधानमंत्री के विचारों को सुना और लोगों से अनुकरण करने का आह्वान किया। भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती,मंडल अध्यक्ष जगत नारायण शुक्ल, जिलामंत्री कमलेश तिवारी, जिला पंचायत सदस्य सुरेंद्र पटेल, पूर्व मंडल अध्यक्ष अखिलेश पटेल, सेक्टर संयोजक व बूथ अध्यक्ष पार्टी के जसरा मंडल सभी पार्टी पदाधिकारियों संग शिवयश पांडेय, अवधेश तिवारी, विजय राज सिंह,अखिलेश सिंह पटेल, दीप नारायण शास्त्री, प्रीतम केशरवानी, नवनीत मिश्र, प्रधान चंद्रा लोहगरा मोहन यादव, अभिषेक शुक्ला, बड़े बाबू सेमरा आदि लोग उपस्थित रहे है।

हेड कांस्टेबल पर कातिलाना हमला, एफआईआर दर्ज

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। कोविड वैक्सीनेशन कैंप में ड्यूटी कर रहे हेड कांस्टेबल पर जानलेवा हमले का मामला सामने आया है। यह हमला उस समय किया गया, जब हेड कांस्टेबल ड्यूटी करके घर लौट रहा था। मामले में पुलिस ने घायल के बेटे की तहरीर पर सुसंगत धाराओं में केस दर्ज किया है।

जानकारी के मुताबिक शंकरगढ़ थाने पर तैनात हेड कांस्टेबल महेंद्र यादव की ड्यूटी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शंकरगढ़ में चल रहे वैक्सीनेशन कैंप में लगाई गई है। बताया जाता है कि चार-पांच दिन पहले वैक्सीनेशन के दौरान एक व्यक्ति जबरन अंदर जाने की कोशिश कर रहा था, जबकि हेड कांस्टेबल महेंद्र यादव ने उसे लाइन में लगने की सलाह दी। इसी बात को लेकर दोनों के बीत विवाद हो गया। हालांकि उस समय स्थानीय लोगों ने दोनों को शांत करा दिया। आरोपित है कि ड्यूटी से लौटते समय अज्ञात लोगों ने हेड कांस्टेबल महेंद्र यादव के ऊपर जानलेवा हमला कर दिया, जिसमें वह गंभीर रूप से घायल होगया। घायल को पहले सीएचसी शंकरगढ़ ले जाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद एसआरएन के लिए रेफर कर दिया गया। इस मामले में 27 अगस्त को घायल के बेटे अमित कुमार यादव ने शंकरगढ़ पुलिस को तहरीर दी। तहरीर के आधार पर शंकरगढ़ पुलिस ने 28 अगस्त को प्रीतम उर्फ मोनू (निवासी अतरैला, चित्रकूट) और एक अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज किया है।एस ओ कुलदीप तिवारी ने बताया कि इस मामले में धारा 307, 323, 504, 560, 452, 332, 353 के तहत मामला पंजीकृत कर जांच की जा रही है। घायल महेंद्र यादव का इलाज एसआरएन में चल रहा है।

एसआरएन में भर्ती घायल की हालत नाजुक

पांडर गोशाला : बिजली नहीं होने से प्यास से जूझ रहे मवेशी

घूरपुर। प्रदेश सरकार गोशाला के प्रति जितना ही सजग हैं। जिम्मेदार उतना ही उदासीन बने हुए हैं। इसे ऐसे ही समझा जा सकता है कि जसरा विकास खंड के पांडर गांव के गौशाला में अभी तक बिजली की व्यवस्था नहीं की गई। जिससे मेवेशियो पेयजल की समस्या से जूझ रहे हैं। प्रदेश सरकार द्वारा प्राथमिकता के बावजूद पांडर गोशाला में बिजली न पहुंचने के कारण गो स्थल पर सैकड़ों मवेशियों के पानी का इंतजाम कर पाना असंभव है। किसी तरीके से हैंड पाइप से मजदूर मवेशियों की प्यास बुझा रहे हैं। जबकि प्रदेश सरकार की पहली प्राथमिकता है कि गो स्थल तक बिजली पहुंचे ताकि वहां पर सारी चीज व्यवस्थित हो सके। स्थानीय प्रशासन की उदासीनता साफ नजर आ रही है। ग्राम प्रधान पांडर सुरेंद्र सोनकर ने बताया कि पिछले पंचवर्षीय में कराए गए कार्य संतोषजनक नहीं है। कई कार्य अभी तक अधूरे पड़े हुए हैं और सबसे बड़ी समस्या बिजली की है। जिससे पानी नहीं मिलता जानवरो को एक हैंडपंप से पानी पहुंचा पाना मुश्किल का काम है। प्रधान ने विकास खंड अधिकारी जसरा को प्रार्थना पत्र देकर जानकारी दी वावजूद कोई सुनवाई नहीं की गई है। इसके लिए प्रशासन से भी मांग की गई है।

दुराचार का नाबालिग आरोपी गिरफ्तार

शांतिभंग में तीन का चालान

गिरफ्तार किये गये आरोपी गण।

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत शंकरगढ़ पुलिस ने दुराचार के मामले में वांछित चल रहे बाल अपचारी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्त में आए आरोपी के खिलाफ अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है। एसओ शंकरगढ़ कुलदीप कुमार तिवारी ने बताया कि अपराध संख्या 242/21, धारा 493, 376, 506, 342 के एक आरोपी को आज शिवराजपुर चौराहे से गिरफ्तार कर लिया गया। मुखबिर की सूचना पर की गई गिरफ्तारी के बाद आरोपी को थाने लाया गया। पूछताछ की गई। उसके खिलाफ आगे की विधिक कार्यवाही की जा रही है। गिरफ्तारी में एसओ के साथ कांस्टेबल अर्जुन यादव, महिला कांस्टेबल आरती, लक्ष्मी भी शामिल रहीं। दूसरी तरफ शंकरगढ़ पुलिस ने शांतिभंग के मामले में तीन लोगों का चालान किया है। एसओ कुलदीप कुमार तिवारी ने बताया कि दयाशंकर मांझी पुत्र देवसरन, दिनेश कुमार मांझी पुत्र देवसरन और कमलभान केवट पुत्र राधेश्याम (सभी निवासीगण लोनीपार, कटरा, शंकरगढ़) का शांतिभंग की धारा 151, 107, 116 में चालान किया गया है।

शौच को गई किशोरी के साथ दुष्कर्म की कोशिश बीच-बचाव के लिए पहुंचें लोगों से मारपीट

घूरपुर। इलाके के एक गांव में शौच को गई किशोरी के साथ एक युवक दुष्कर्म की कोशिश की तो किशोरी चीख पुकार करते घर की ओर भागी तो आरोपी भी घर में घुस शिकायत ना करने की धमकी दी। कुछ ग्रामीणों ने विरोध किया तो आरोपियों के परिजनो ने मारपीट करने लगे जिसमे बीच बचाव करने पहुंचा एक युवक घायल हो गया। शिकायती पत्र पर पहुंची पुलिस तो आरोपी घर छोड़ भाग निकले। लालापुर थाना क्षेत्र के एक गांव का व्यक्ति अपने पत्नी व बच्चों सहित घूरपुर इलाके के एक गांव के हाईवे के पास किराए का कमरा लेकर रहता है सब्जी आदि का कारोबार करता है। शनिवार देर शाम उसकी 14 वर्षीय बेटी घर से कुछ दूर खेत की ओर शौच को निकली तो गांव का ही एक युवक किशोरी को दबोच दुष्कर्म की कोशिश करने लगा। किशोरी किसी तरह उसके चंगुल से छूट चीख पुकार करते घर की ओर दौड़ी तो चीख पुकार सुन आसपास के लोगो की भीड़ जुट गई। आरोपी युवक इतने के वावजूद भी किशोरी के घर पहुंच उसके परिजनो से मारपीट करते पुलिस से शिकायत ना करने की धमकी दे जान से मारने की बात कही। इस बीच आरोपी युवक के परिजन भी पीड़ित के घर चढ़ गए। इस बात को लेकर जब गांव का ही एक पक्ष ने विरोध किया तो आरोपी पक्ष लाठी डंडे से उस पक्ष से मारपीट करने लगा जिसमे बचाव पक्ष से एक युवक घायल हो गया। पीड़ित पक्ष ने थाने में दुष्कर्म के आरोपी युवक सहित कई लोगो के खिलाफ थाने में शिकायती पत्र दे कर कार्रवाई की मांग की। पुलिस पहुंची तो आरोपी घर छोड़ भाग निकले।

ताला तोड़कर किराना की दुकान से उड़ाया नगदी व सामान

घटना स्थल पर लगी भीड जांच पड़ताल करती पुलिस।

अखंड भारत संदेश

करछना। थाना क्षेत्र के भडेवरा गांव में एक किसान के बेटे के दुकान से शनिवार देर रात्रि में दुकान का ताला काट कर के चोरों ने तकरीबन 40 हजार रुपए के सामान उठा ले गए। जिससे परिजन चिंतित व मायूस है। रविवार को अज्ञात चोरों के खिलाफ करछना थाने में पीड़ित भुक्तभोगी की ओर से लिखित तहरीर दी गई है । करछना थाना क्षेत्र के भडेवरा गांव निवासी व्यवसायी श्रीकांत पांडेय पुत्र स्व अवध नारायण पांडेय की हनुमान पुर लोहदी मार्ग पर किराने सहित जनरल स्टोर की दुकान है। शनिवार की शाम को व्यवसाई श्रीकांत पांडेय अपने पुराने घर पर चले गए थे । वहीं शनिवार की देर रात्रि में अज्ञात चोरों ने दुकान के दरवाजे का ताला काटकर अंदर घुसे चोरों ने दुकान से कीमती अनेक सामान उठा ले गए। पीड़ित भुक्तभोगी श्रीकांत पांडेय के मुताबिक 8 बोरी अरहर की दाल एक बोरी मूंग की दाल एक बोरी उड़द की दाल 7 पेटी गुड एक सेट पिलर बनाने का लोहे का फार्मा आदि अन्य सामान तकरीबन 40 हजार रुपए के उठा ले गए । पीड़ित श्रीकांत पांडेय ने रविवार को अज्ञात चोरों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करने के लिए लिखित रूप से करछना थाने में तहरीर दी है । उन्होंने बताया कि मैजिक गाड़ी पर लाद करके चोर सामान उठा ले गए । दुकान पर मैजिक गाड़ी के पहिए के निशान बने हुए हैं। सूचना पर पहुंची भुंडा पुलिस चौकी के सिपाहियों ने जांच पड़ताल सहित लिखा पढ़ी करके वापस चले गए । पीड़ित भुक्तभोगी व्यवसायी श्रीकांत पांडेय ने यह भी बताया कि दो माह पूर्व दुकान में चोरों ने दुकान का ताला काट दिए थे । और जगहट होने पर भाग गए थे। इसकी भी लिखित सूचना पुलिस चौकी भुंडा पर दी गई थी।

इलेट्रॉनिक दुकान का टूटा हुआ ताला

इलेक्ट्रॉनिक दुकान का ताला तोड़ लाखों का माल किया पार

घूरपुर। स्थानीय कस्बे के रेलवे फाटक के पास स्थित इलेक्ट्रॉनिक दुकान का ताला तोड़ घुसे चोरों ने एक लाख से ज्यादा कीमत के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण पार कर दिया । रविवार की सुबह दुकान का ताला टूटा देख आस पास के लोगों में हड़कम्प मच गया । पीड़ित ने मामले की शिकायत घूरपुर पुलिस से की तो मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच पड़ताल की। घूरपुर थाना क्षेत्र के कंजासा गांव निवासी सोनू विश्वकर्मा की घूरपुर प्रतापपुर मार्ग स्थित रेलवे फाटक के उस पार शक्ति इलेक्ट्रॉनिक नाम से दुकान है ।शनिवार की रात लगभग आठ बजे दुकान मालिक सोनू विश्वकर्मा दुकान का ताला बंद कर घर चला गया । इधर देर रात चोरों ने शटर का ताला तोड़ दुकान के अंदर घुसे और आठ बैटरी,सात इन्वर्टर,दो सिलाई मशीन,चार सीलिंग फैन सहित कई उपकरण पार कर दिए । रविवार की सुबह जब दुकानदार पहुंचा तो नजारा देख दंग रह गया । चोरी की शिकायत घूरपुर पुलिस से की गई तो मौके पर पहुंच जांच पड़ताल की गई ।

लोककला महासंघ जमुना पार के कलाकारों के पारंपरिक बैठक में समस्याओं पर चर्चा

अखंड भारत संदेस

करछना। तहसील के अंतर्गत ग्राम सभा भरहा में आज श्री गुलाब सिंह की अध्यक्षता में लोक कलाकारों की बैठक संपन्न हुई जिसमें कलाकारों ने अपनी समस्या को लेकर चर्चा की इस बीच सरकार से अपनी पारिश्रमीक मांग की इस बीच कलाकार रामबाबू यादव लोक गीत एवं बिरहा कलाकार ने कहा कि कोरोना काल में हम कलाकार का कार्यक्रम पुरी तरह से बन्द है जिसके बाद कलाकार अपना किसी तरह से गुजरा कर रहा है सरकार को हम कलाकारों के लिए पेंशन योजना लागू करे जिससे लोक कलाकार का गुजारा हो सके और लोक कलाकार अपनी कला को और आगे ले जाने में सफल होइस मौके पर लोक कलाकार में ,रामबाबू यादव पंचम लाल यादव , जगतपाल सिंह, नेब्बूलाल यादव , रामबाबू त्रिभुवन नाथ गौड , गीता गुंजन हरिश्चंद्र पांडे राम रूप यादव परमात्मा राम , राम जन्म यादव , दिनेश कुमार पटेल , संगम लाल यादव उदय राज सिंह कमलेश कुमार आदि लोक कलाकार मौजूद रहे।

लोककला महासंघ के कलाकारों ने बैठक में किया प्रतिभाग।

विवाहिता को ससुराल जनों ने पीट कर भगाया, दी तहरीर

उतरांव। उत्तराव थाना क्षेत्र के दम गड़ा गांव में एक विवाहिता को ससुराल जनों ने मारपीट कर घर से भगा दिया। वही विवाहिता भाड़े पर कमरा लेकर एक बच्चे के साथ गुजर बसर करने को मजबूर है। पीड़िता ने उतराव थाने में अपने ससुर देवर सास समेत ननद के खिलाफ नामजद तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की। दम गड़ा गांव निवासी संतोष कुमार मौर्य जिसका विवाह मऊआइमा के एक गांव में नीलू मौर्या के साथ 2016 मई में हुआ था। विवाह के कुछ दिन बाद से ही ससुराल जनों द्वारा विवाहिता को प्रताड़ित किए जाने लगा। वही विवाहिता को आए दिन ससुराल के सास ससुर ननद देवर द्वारा मारा पीटा जाता था।जिसको लेकर गांव में ही कई बार पंचायत भी किया गया। फिरहाल इनके द्वारा यह प्रक्रिया जारी रहा। वही विवाहिता अजीज आकर अपने पति संतोष मौर्या के साथ झूँसी में कमरा लेकर अपने एक बच्चे के साथ रहने लगी। कुछ दिन बाद घर आई तो ससुराल जनों द्वारा मारपीट कर घर से निकाल दिया। पीड़िता नीलू मौर्या गिड़गिड़ाती रही लेकिन ससुर ने उसकी एक न सुनी।अपने हक की लड़ाई के लिये पीड़िता ने ससुर सास देवर व ननंदों के खिलाफ नामजद तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की। विवाहिता ने अपनी एक बच्चे व पति की सुरक्षा के लिए उच्च अधिकारियों से भी न्याय की गुहार लगाई है।पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

न्याय पाने के लिए दी तहरीर

बिना डिग्री डिप्लोमा के चलाए जा रहे नर्सिंग होम

अखंड भारत संदेश

आखरी स्वस्थ्य विभाग क्यो मेहरबान हैं झोलाछाप चिकित्सकों पर

सिरसा/मेजा। प्रयागराज मेजा क्षेत्र में अवैध रूप से संचालित हो रहे नर्सिंग होम वर्तमान समय में स्वास्थ्य विभाग की आमदनी का जरिया बना हुआ है।यही कारण है कि मेजा क्षेत्र में अवैध रूप से चल रहे नर्सिंग होम पर कोइ कार्रवाई की गाज नहीं गिराई जा रही है जब स्वास्थ्य विभाग महकमे की ज्यादा किरकिरी होने लगती है,तो विभागीय अधिकारी सीएमओ के निर्देश पर छोटी मोटी कार्रवाई करके कार्रवाई का डंका पीट कर शांत बैठ जाते हैं। देखा जाय तो मेजा क्षेत्र में हर चौराहे और हर नुक्कड़ पर नर्सिंग होम खुल गया है। शासन के मंसूबों में पानी फेरते मानक विहीन मेडिकल व नर्सिंग होम छोटे-छोटे घरों में संचालित हो रहे हैं। संचालित वाले भवन के लिए इंडियन मेडिकल कौंसिल की ओर से एक मानक निर्धारित किया गया है। स्वास्थ्य विभाग के सेटिंग गेटिंग की खेल चलते इन अस्पतालों के ऊपर कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। आखिर स्वास्थ्य विभाग क्यों मेहरबान है झोलाछाप चिकित्सकों पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी की भ्रष्ट कार्यशैली ने स्वास्थ्य व्यवस्था को पंगु बना दिया है। अपनी मनमानी पर आमादा सीएमओ कार्यालय भी बेलगाम हो चुका है।मौजूदा समय में आए दिन सुर्खियों में रहने वाला स्वास्थ्य महकमे के प्रति आम जनमानस का नजरिया यही ही चला है।चाहे जिला चिकित्सालय के चिकित्सकों मनमानी करें या फिर जिले में झोलाछाप चिकित्सकों पर कार्रवाई का मामला हो मालूम हो कि कि जनपद मुख्यालय से लेकर कस्बों तक झोलाछाप चिकित्सकों का जाल फैला है।आए दिन कोई न कोई घटना घटित होती है जिससे किसी न किसी की जान जा रही है। उसमें काम करने वाले चिकित्सालय चिकित्सकों के पास कोई डिग्री नहीं है।सरकारी अधिकारियों के उदासीनता से गरीब और लाचार मरीजो का किया जा रहा शोषण। जांच के नाम परआज तक कोई भी नर्सिगहोम को सील नही किया गया और न ही किसी के ऊपर कोई कानूनी कार्यवाही किया गया।

कागजों तक सिमटीं ज्यादातर शौचालय रूम

गांवों में मार्ग पटरियों पर गंदगी, संक्रामक रोगों का खतरा

कोरांव। सरकार ने अकूत धन गंगा नदियों गांवों की साफ सफाई के लिए तथा स्वक्छता अभियान चला कर हर गांवों में पर्याप्त मात्रा में लैट्रीन रूम बांटा गया धन पानी की तरह बहाया,किंतु चाहे नदियां हो या ग्राम सभाओं की पटरियां हो सार्वजनिक स्थल हों गन्दगी से भरी पटी हुई हैं,जिससे संक्रामक रोगों में वृद्ध हुई है। स्वक्छ भारत मिशन के नाम पर जिम्मेदारों ने जी भर कर गांव गांव डगर डगर नगर नगर सामुदाइक शोंचालय एवम बारह बारह हजार वाले हर घर को दिया गया। किन्तु कमीशन खोरी की भेंट चढ़ी उक्त शोंचालयों की स्थिति देख कर भी शर्म आती हैं। ज्यादातर लैट्रीन रूमे कागजों पर बनी हैं या सिर्फ ढांचे ही नजर आते हैं।हैं।बारह हजार की लैट्रीन में तीन से चार हजार रुपए तक का कमीशन लिया गया है। इसी तरह सामुदायिक शोंचालयो में जी भर कर लूट पाट की गई है। जिससे ज्यादातर अस्सी प्रतिशत उक्त सामुदायिक शोंचालय अधूरे पर हैं,और कागजों पे निर्मित हैं। लेकिन उन्हें जबरन ग्राम निधि से पंचायतीराज विभाग द्वारा हर माह सफाई कर्मी तथा रख रखाव के लिए दासियों हजार रुपए ले लिए जा रहे हैं। जिस पर नव निर्वाचित ग्राम प्रधानों में आक्रोश है। अगर उक्त समुदाइक तथा बारह हजार वाली शोंचालयों की जांच कराई जाए तो उक्त सरकार के मिशन की सच्चाई सामने आ जाएगी। और रिकब्री भी हो जायेगी।

खबर संक्षेप

दो दर्जन अनुपस्थित खंड शिक्षा अधिकारियों का बीएसए ने रोका वेतन

प्रयागराज। बैठक में उपस्थित न होने पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ने दो दर्जन खंड शिक्षा अधिकारियों (बीईओ) के एक दिन का वेतन तत्काल प्रभाव से रोक दिया है। बैठक के लिए जो समय निर्धारित किया गया था, उस वक्त बीईओ ने उपस्थित होने पर असमर्थता जाहिर की थी। उनकी समस्या को ध्यान में रखते हुए बैठक का समय बदला गया, इसके बावजूद दो दर्जन बीईओ बैठक में शामिल नहीं हुए। सीडीओ ने 28 अगस्त को विकास भवन सभागार में सुबह 11 बजे बेसिक शिक्षा विभाग के तहत संचालित कार्यक्रमों/योजनाओं की समीक्षा के लिए बैठक बुलाई थी। इसी क्रम में बीएसए ने एक दिन पूर्व 27 अगस्त को सुबह 10 बजे समस्त सूचनाओं सहित अपने कार्यालय में सभी जिला समन्वयकों एवं खंड शिक्षा अधिकारियों की बैठक बुला ली। कुछ खंड शिक्षा अधिकारियों की ओर से अवगत कराया गया कि 27 को ही सुबह 11 बजे डायट प्राचार्य की अध्यक्षता में भी बैठक बुलाई गई है। बीईओ की समस्या को ध्यान में रखते हुए बीएसए ने बैठक का समय शाम चार बजे निर्धारित किया। शाम छह बजे तक बैठक में खंड शिक्षा अधिकारी मुख्यालय, नगर शिक्षा अधिकारी शिव अवतार, खंड शिक्षा अधिकारी फूलपुर एवं सभी जिला समन्वयक ही उपस्थित हुए।

धूमधाम से आज मनाया जाएगा नटवर नागर का जन्मोत्सव

अखंड भारत संदेश

बन रहे द्वापर जैसे शुभ संयोग

प्रयागराज। शहर के हर घरों में आज धूमधाम से मनाया जाएगा कृष्ण जन्मोत्सव भगवान कृष्ण के जन्म के समय द्वापर युग में जिस तरह शुभ ग्रह-नक्षत्रों का मिलन हुआ था, वैसे ही संयोग इस बार 30 अगस्त को श्रीकृष्ण के जन्म के समय मिलेंगे। सर्वार्थ सिद्धि योग के साथ ही जयंती योग और हर्षण योग इस जन्माष्टमी को खास बनाएंगे। हालांकि कोरोना संक्रमण की वजह से मंदिरों में इस बार बड़े स्तर पर न झांकियां सजाई जाएंगी और ना ही सामूहिक तौर पर भीड़ वाले आयोजन होंगे, लेकिन घर-घर में कृष्ण जन्मोत्सव की तैयारियां की गई हैं। इस जन्माष्टमी पर एक साथ कई शुभ संयोगों में नटवर नागर की पूजा करने से मनोवांछित फलों की प्राप्ति होगी।पुराणों के अनुसार द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण का जन्म भादों मास में कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि पर बुधवार को रोहिणी नक्षत्र में चंद्रमा के वृष राशि में रहते हुआ था। इस बार बुधवार की जगह सोमवार मिल रहा है। बाकी सभी योग द्वापर जैसे हैं। सोमवार को रोहिणी नक्षत्र सुबह 6:39 बजे शुरू हो जाएगा। चंद्रमा एक दिन पहले से अगले दिन शाम तक वृषभ राशि में रहेगा। अष्टमी भी रात 2.02 बजे तक रहेगी। वहीं, सोमवार का दिन चंद्रमा और भगवान शिव के लिए प्रिय होने की वजह से जन्माष्टमी में शुभ और वृद्धिकारक रहेगा। ज्योतिषाचार्य पं. रवि कांत मिश्र (व्यास जी) के मुताबिक सोमवार को जन्माष्टमी के दिन कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्र भी रहेगा। इसके अलावा जन्माष्टमी पर हर्षण योग इस दिन के महत्व को कई गुना बढ़ा देगा। जन्माष्टमी पर सूर्य और मंगल सिंह राशि में स्थित होंगे। चंद्र राहु, केतु उच्च राशि में हैं। बुध उच्च राशि में हैं। शनि अपनी राशि में है और देव गुरु बृहस्पति लग्न को देख रहे हैं। अष्टमी और रोहिणी नक्षत्र एक साथ पड़ने से जयंती योग भी बन रहा है। ज्योतिषियों के मुताबिक इस कृष्ण जन्माष्टमी पर सुबह 6:22 बजे से रात 12:16 बजे तक सर्वार्थ सिद्धि योग रहेगा। इस दिन पूजन अनुष्ठान और प्रसाद के अलावा भगवान की प्रतिमाएं, वस्त्र, शृंगार, आभूषण और सजावटी समान की खरीदारी समृद्धिदायक होगी।

अमृत महाउत्सव के अंतर्गत गंगा संरक्षण हेतु कचरा प्रबंधन पर दिया जोर

अखंड भारत संदेश

संयुक्त रूप से किया गया जनजागरण कार्यक्रम का आयोजन

प्रयागराज। आजादी के पच्चहतरवें वर्ष, अमृत महोत्सव के अवसर पर नेहरू युवा केंद्र (नमामि गंगे परियोजना) प्रयागराज तथा रिजनल आउटरीच ब्यूरो, प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को जनजागरण कार्यक्रम खंड चाका के गंगा ग्राम पिपराव में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विवेक सागर एवं उनकी टीम द्वारा रोचक व मनोरंजक तरीके से स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान व आजादी के महत्व को कठपुतली नाट्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में जिला परियोजना अधिकारी (नमामि गंगे) एषा सिंह ने उपस्थित सभी ग्रामीणों के बीच अपशिष्ट प्रबंधन विषय पर आख्यान दिया जिसमें उन्होंने चित्रमय चार्ट के माध्यम से अपशिष्ट उसके प्रकार, समस्याएं व निदान के बारे में विस्तार में चर्चा की ' डीपीओ ने बताया अपशिष्ट निस्तारण, रीसायक्लिंग, तथा उससे ऊर्जा उत्पादन इन सभी को समवेत रूप में अपशिष्ट प्रबंधन कहा जाता है' कागज को रीसायकल कर पेड़ों को अनावश्यक कटने से रोका जा सकता है। वहीं कचरा निस्तारण में घरों से निकले आर्गेनिक कचरे को बायो कंपोस्ट और मीथेन गैस में बदल कर लोगों द्वारा उपयोग में लाया जा सकता है। मीथेन गैस जहां ऊर्जा का बेहतरीन स्रोत है वहीं जैविक खाद मिट्टी की ऊर्वरता को स्वाभाविक रूप से बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है। लोगों को गंगा स्वछता शपथ दिलाकर कार्यक्रम का समापन किया गया' रीजनल आउटरीच ब्यूरो के परमानंद, करुणा सिंधु, भलानाथ प्रजापति ने कार्यक्रम में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। कार्यक्रम का संचालन युवा मंडल अध्यक्ष निर्मल कांत पांडे ने किया। कार्यक्रम में ग्राम प्रधान राजेश कुमार निषाद खास सहयोग रहा, तथा क्षेत्रीय गंगा दूत एवं स्थानीय ग्रामीणों ने पूरे उत्साह के साथ बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

भाजपा पदाधिकारियों ने किया विभिन्न गांवों में बूथ सत्यापन

मंडल प्रभारी मनोज सिंह आचार्य के नेतृत्व में गांव में बूथ सत्यापन कार्य करते

अखंड भारत संदेश

प्रतापपुर। भारतीय जनता पार्टी के जंघई मंडल प्रभारी मनोज सिंह आचार्य के नेतृत्व में रविवार को जंघई मंडल के विभिन्न गाँवों में बूथ सत्यापन किया गया।भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ कार्यकताओं ने कई बूथों पर घूम घूम कर बूथों का सत्यापन करते हुए बूथों का जायजा लिया।इस अवसर पर बूथ सत्यापन अधिकारी सभाजीत मिश्र, शक्ति केन्द्र संयोजक द्वय माताशंकर तिवारी, मेहीलाल बिन्द, शक्ति केंद्र प्रभारी रमेश चंद्र बिन्द, मंडल उपाध्यक्ष रामधारी सरोज, डॉ0 विजय शंकर शुक्ला ने नेदुला,नंदापुर, शेरपुर, केवलापुर, रस्तीपुर, खखैचा पहुँचकर, बूथ समिति की बैठक में विचार विमर्श कर स्थिति का जायजा लिए।उक्त अवसर परअरुण कुमार दुबे, सोनू दुबे, आलोक रंजन, राज कुमार विश्वकर्मा, यज्ञेश कुमार, अजीत बिन्द, रमेश कुमार, प्रवीण सिंह, दिनेश कुमार, लाल चन्द्र बिन्द, विवेक, देवेन्द्र प्रसाद सहित कई भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।या किया बूथ सत्यापन इसी प्रकार प्रतापपुर भाजपा मंडल अध्यक्ष आशुतोष त्रिपाठी के नेतृत्व में मंडल के विभिन्न गाँवों का रविवार को बूथ सत्यापन किया गया।बूथ सत्यापन शक्ति केंद्र छतौना और पिड़ौना में मंडल के महामंत्री श्यामधर शर्मा, मंडल प्रभारी मीडिया मयंक मिश्रा, अच्छे लाल पटेल, लाल पटेल, उदयवीर प्रजापति, मोहित शुक्ला, छतौना शक्ति केंद्र बूथ सत्यापन अधिकारी पूर्व मंडल अध्यक्ष बिंदु सिंह, मंडल उपाध्यक्ष कृष्णदेव, शक्ति केंद्र संयोजक बृजेश यादव सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

भाजपा कार्यकताओं ने बूथ सत्यापन के साथ-साथ प्रधानमंत्री की मन की बात को भी ध्यान से सुना

सहसों। भारतीय जनता पार्टी मंडल सहसों गंगा पार प्रयागराज में मन की बात और बूथ सत्यापन का कार्यक्रम किया गया। रविवार को सेक्टर चिरोड़ा में ग्राम प्रधान कृष्ण कुमार चौरसिया के आवास पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक प्रवीण पटेल ने ग्राम वासियों के साथ एवं बूथसमितियों के साथ मिलकर माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा मन की बात का कार्यक्रम सुना । जिसमें प्रधानमंत्री जी ने देशवासियों को कृष्ण जन्माष्टमी की शुभकामना दिया और उन्होंने बताया कि किस प्रकार से सिर्फ अपने देश में ही नहीं विदेशों में कृष्ण की भक्ति के दीवाने हैं। इस्कान के माध्यम से भी न जाने कितने विदेशी जुड़े हुए हैं कार्यालयों में भी कृष्ण भक्ति और राम भक्ति कर रहे हैं। यहां तक की विदेशों की विश्वविद्यालय में भी विदेशी शिक्षक ही संस्कृत शिक्षा दे रहे हैं। यह देश का गौरव है कि हमारी संस्कृति और हमारी सभ्यता को विदेशी व्यक्ति भी विश्व के कोने कोने में पहुंचा रहे हैं इसके अतिरिक्त केंद्र की सरकार एवं राज्य सरकार गरीबों, मजदूरों, आशाओं की सेवा के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। आने वाले त्योहारों के लिए भी प्रधानमंत्री जी ने देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी है। प्रवीण पटेल ने आगे बताया कि सरकार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों के बारे में लोगों को विस्तार पूर्वक चर्चा की और आए हुए लोगों के द्वारा अपनी-अपनी समस्याओं को उन्होंने गंभीरता से सुना और उसके निस्तारण के लिए समुचित व्यवस्था करने का आश्वासन दिया । इसके साथ ही बूथ सत्यापन बूथ भी किया गया जिसमें सभी बूथ अध्यक्ष एवं उनकी टीम उपस्थित रहे। मंडल सहसों के नवनियुक्त मंडल प्रभारी बनाए गए श्री मृगेंद्र सिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा इस गांव में आकर हमने गंगा जमुनी तहजीब को देखा है नवनियुक्त मंडल प्रभारी श्री मृगेंद्र सिंह के साथ साथ मंडल के नवनियुक्त पदाधिकारी राजेंद्र कुमार वर्मा दया सिंह और राम सुधार बिंद को माला पहनाकर उनका स्वागत किया गया कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं धन्यवाद मंडल अध्यक्ष अनिल कुमार सरोज एवम कार्यक्रम का संचालन महामंत्री पवन कुमार शुक्ला ने किया । कार्यक्रम में मुख्य रूप से कृष्ण कुमार चौरसिया, अनिरुद्ध सिंह पटेल, शशांक मिश्रा, सत्यम त्रिपाठी उर्फ वीके, मूलचंद पाल, नरेंद्र कुशवाहा, पुष्कर सिंह, विमल मिश्रा, संदीप दुबे, टी एन सिंह, विजय चौरसिया, रमेश चंद्र शुक्ला, राकेश चौरसिया, लाल बहादुर भारतीय, रामराज विश्वकर्मा, कमल पटेल, श्री राम पटेल, संदीप चौरसिया, चंद्रिका प्रसाद गुप्ता, केशव गुप्ता , रमेश चौरसिया व अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

जन समस्याओं को लेकर ग्रामीणों का आंदोलन दो वर्ष से जारी

कोरांव ब्लाक के ग्राम सिरियारी में 2019 से चल रहा आंदोलन में शामिल लोग

पसना। कोरांव ब्लॉक अंतर्गत ग्राम सिरियारी में 2019 में गांधी जयंती के दिन से शुरू हुआ आंदोलन आज तक जारी है। ग्रामीण क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं यथा बिजली, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा,राशन आदि की बेहतर व्यवस्था हेतु आंदोलन के माध्यम से ग्रामीणों द्वारा मांग उठायी जा रही है। कोरोना काल के पहले हरेक दिन ग्रामीण अपनी मांगों के समर्थन में ग्राम पंचायत कपुरी बढ़ैया के हर मजरे में सुबह सबेरे ही एकत्रित होकर घर-घर आंदोलन की अलख जगाते थे लेकिन कोरोना महामारी के कारण सम्पूर्ण देश मे लगे लॉकडाउन ने आंदोलन की राह रोक दी। लॉकडाउन में ढील के दौरान प्रत्येक रविवार को ग्रामीण प्राथमिक पाठशाला पर एकत्रित होकर पुनः आंदोलन को नई धार देने में जुट गये। आंदोलकारी छोटेलाल ने बताया कि आंदोलन के बदौलत ही गड़रान बस्ती में विद्युतीकरण हुआ लेकिन मीटर की गड़बड़ी एवं ठेकेदार की मनमानी की वजह से ग्रामीण गलत बिल की समस्या से जूझ रहा है। उन्होंने कपुरी गांव में नौनिहालों की शिक्षा हेतु प्राथमिक शाला खोलने की मांग आंदोलन के माध्यम से शासन से की है। जनसुनवाई फाउंडेशन के राज्य समन्वयक कमलेश मिश्र एडवोकेट ने बताया कि जनसमस्याओं को लेकर हमारा आंदोलन क्षेत्र के सींकी कला,भइयाँ, बड़ोखर,सिरियारी आदि गांवों में चल रहा है,इस सम्बंध में फाउंडेशन की ओर से राज्य मानवाधिकार आयोग में पत्र भेजा गया था,जिसके सापेक्ष आयोग ने मण्डलायुक्त से आख्या मांगी है। आंदोलन के जनपद समन्वयक विवेक सिंह रानू ने बताया कि ग्रामीणों की आवास समस्या हेतु पात्र गरीबों को ग्रामसभा से पट्टे दिलाकर प्रधानमंत्री आवास योजना से आवास दिलाना संगठन का प्रमुख उद्देश्य है। ब्लाक समन्वयक अशोक मिश्र अधिवक्ता का कहना है कि संगठन गरीब व दलित समुदाय को निःशुल्क कानूनी सहायता उपलब्ध कराकर उनकी हर सम्भव मदद करता है।

आप पार्टी ने बनाई चुनाव की रणनीति

अखंड भारत संदेश

बैठक में आगामी विधानसभा चुनाव की रणनीति तय करते आप पार्टी कार्यकर्ता

करछना। आम आदमी पार्टी करछना कार्यालय में ब्लॉक कार्यकारिणी की बैठक संपन्न हुयी जिसकी अध्यक्षता जिला उपाध्यक्ष नेहा सिंह ने की। बैठक में आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर जिले में ₹यूपी जोड़ों सदस्यता₹ अभियान चलाया जा रहा है। जिसमे पूरे प्रदेश में डेढ़ करोड़ लोगों ने पार्टी की सदस्यता ली । करछना ब्लॉक में कई बीडीसी ने जिला उपाध्यक्ष नेहा सिंह के द्वारा पार्टी की सदस्यता ग्रहण किया। पार्टी पूरे प्रदेश में तिरंगा यात्रा के माध्यम से लोगों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत किया जा रहा है व आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए ज्यादा से ज्यादा लोग आम आदमी पार्टी से जुड़ रहे हैं। 14 सितंबर को अयोध्या में तिरंगा यात्रा संपन्न होगी । जिले के सभी कार्यकर्ता व पदाधिकारी तिरंगा यात्रा को सफल बनाने के लिए अयोध्या पहुँचने की अपील किया जाता है । आप के ब्लॉक पदाधिकारियों ने कहा कि नहरों में पानी न होने से धान की सिंचाई नहीं हो पा रही है, बिजली की कटौती से टयूबबेलों से भी सिंचाई नहीं हो पा रही है। पार्टी के लोगों ने गाँव में कुओं में दवा छिड़काव की मांग की है । रामपुर से सिंगरौली निर्माण मार्ग मानक के अनुरूप ना होना व गुणवता मे कमी होने के कारण लोगों ने आक्रोश व्यक्त किया। कार्यकर्ता अभी से विधानसभा चुनाव की तैयारी में जुट जाएं। बैठक में ब्लॉक अध्यक्ष कमलेश पासवान, उपाध्यक्ष रवि भारतीय, हबीबअहमद ,सतेंद्र बीडीसी, शेर बहादुर बीडीसी, मौजी लाल बीडीसी,सुनीता, गायत्री, पवन कुमार, मनोहर लाल, दिनेश गुप्ता, सुशील प्रजापति, चंद्रशेखर, मान, आनंद सिंह, सोनू मिश्रा,आरोही सिंह, आदि लोग उपस्थित रहे ।

प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव का आगमन आज

फूलपुर। प्रगतिशील समाजवादी पार्टी (लोहिया) के राष्ट्रीय महासचिव व यूपीपीसीएफ के इफको निदेशक आदित्य यादव का आगमन आज शाम वीरकाजी गांव स्थित पार्टी के जिलाध्यक्ष दीनानाथ यादव के निज निवास पर होगा। उक्त जानकारी देते हुए प्रसपा के नव नियुक्त जिलाध्यक्ष दीनानाथ यादव ने बताया की राष्ट्रीय महासचिव का कार्यक्रम पूर्व निर्धारित है। फूलपुर क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर कार्यकताओं से मिलते हुए शाम करीब तीन बजे उनका आगमन वीरकाजी स्थित उनके आवास पर होगा। उन्होंने बताया की आदित्य यादव उनके कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित होंगे। बता दें की प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष व जिला पंचायत सदस्य दीनानाथ यादव के आवास पर प्रत्येक वर्ष की भांति इस बार भी कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम में पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव आदित्य यादव के साथ ही सांसद, विधायक सहित अन्य नेता उपस्थित होंगे।

बीएनटी कॉलेज ने जीती सब जूनियर वॉलीबॉल प्रतियोगिता की ट्रॉफी

मेजा में राष्ट्रीय खेल दिवस पर वॉलीबॉल प्रतियोगिता संपन्न

वॉलीबाल प्रतियोगिता में विजयी खिलाड़ी

अखंड भारत संदेश

सिरसा/मेजा। मेजा क्षेत्र में जिला वॉलीबॉल संघ के तत्वाधान में स्थानीय गांव सोरांव मेजारोड के सार्वजनिक खेल मैदान के क्षेत्रीय वॉलीबाल स्टेडियम पर राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष में सब जूनियर बालकों की (अंडर 16) वालीबॉल प्रतियोगिता खेली गई। प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला बी.एन.टी कॉलेज मेजारोड और वशिष्ठ सेवा संघ इंटर कॉलेज महेवा कला(मांडा रोड) के बीच खेला गया। बी.एन.टी कॉलेज मेजारोड में वशिष्ठ सेवा संघ इंटर कॉलेज महेवा कला को 25-11 और 26-24 अंकों से हराकर मेजर ध्यान चंद्र स्मारक वॉलीबाल ट्राफी जीत ली। इससे पूर्व खेले गए अन्य मैचों में सोरांव यूथ क्लब ने स्पोर्ट्स क्लब गरेथा को 25-19,23-25 और 25-21 अंकों से हराया। बी.एन.टी कॉलेज ने सुभाष इंटर कॉलेज पकरी सेवार को 25-20 और 25-16 अंकों से हराया। वॉलीबॉल क्लब मिश्रपुर ने इंटर कॉलेज शंभूचक को 25-17 व 25-23 अंकों से हराया। रामप्रताप इंटर कॉलेज सिरसाने एम.एल.पब्लिक स्कूल को 25-16,18-25 व 25-14 अंकों से हराया। समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजन समिति के अध्यक्ष राहुल द्विवेदी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। जिला वालीबॉल एसोसिएशन,प्रयागराज के महासचिव आर.पी.शुक्ला ने खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया।

उक्त अवसर पर मुख्य रुप से के.बी.एल श्रीवास्तव क्रीडा अधिकारी हिंडालको डॉ.जय प्रकाश शर्मा सचिव जिला खो-खो संघ, प्रयागराज पी. के. पांडेय एडवोकेट, सचिव-जिला कबड्डी संघ,प्रयागराज उमाकांत तिवारी, वाई.एन.सिंह, के.पी.सिंह, प्रभाकर चौबे, ठाकुर प्रसाद यादव, आशीष शुक्ला, अंशु सिंह, अंकित शुक्ला, अशफाक अहमद, कार्तिकेय तिवारी, शितलेश द्विवेदी, पियूष मिश्रा आदि ने अपनी गरिमामयि उपस्थिति में खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।

मेजर ध्यानचंद की जयंती पर वॉलीबॉल खेल का हुवा आयोजन

राष्ट्रीय खेल दिवस पर सपा का खिलाड़ी घेरा कार्यक्रम का आयोजन

सिरसा/मेजा। विधानसभा मेजा मे 29 अगस्त को मेजर ध्यानचंद की जयंती पर समाजवादी खिलाड़ी घेरा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। खिलाड़ी घेरा कार्यक्रम मे वॉलीबॉल खिलाड़ियों ने अपना प्रदर्शन दिखाया। बता दें कि मेजा तहसील क्षेत्र के सोरांव गांव मे वॉलीबॉल खेल के मैदान पर सपा नेता डॉ देवी सिंह पटेल व महासचिव जिला वालीबाल संघ पूर्व वालीबॉल खिलाड़ी रामेश्वर प्रसाद शुक्ला के नेतृत्व मे घेरा कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम मे डॉ देवी सिंह पटेल ने कहा कि भाजपा सरकार खिलाड़ियों के प्रति अनदेखी कर रही है। श्री पटेल ने आगे कहा कि खेल से संबंधित तमाम ऐसी योजनाएं हैं जो सरकार के द्वारा खिलाड़ियों पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। खेल प्रतिभा विलुप्त होती जा रही है। इसी के चलते सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देश पर मेजर ध्यानचंद की जयंती पर समाजवादी पार्टी का खिलाड़ी घेरा कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। महासचिव जिला वालीबाल संघ व पूर्व वॉलीबॉल खिलाड़ी रामेश्वर प्रसाद शुक्ला ने कहा कि सरकार कहती है कि हम स्पोर्ट कोटा बहाल करेंगे लेकिन आज तक स्पोर्ट कोटा बहाल नहीं हुआ। खेल प्रशिक्षक निकाले जा रहे हैं। खेल शिक्षा अनिवार्य किया गया है लेकिन खेल शिक्षक नही हैं। खेल से संबंधित तमाम कमियां हैं जो सरकार अनदेखा कर रही है। इस मौके पर सपा जिला प्रभारी पंचूराम निषाद, मेजा विधानसभा अध्यक्ष श्यामकृष्ण सिंह पप्पू यादव चेयरमैन नगर पंचायत सिरसा, रचित विश्वकर्मा,अभिषेक सिंह अंशु, वाई एन सिंह , प्रेम पांडे पूर्व खिलाड़ी कबड्डी, योगेंद्र सिंह पटेल, के पी सिंह पूर्व खिलाड़ी, उमाशंकर तिवारी, प्रभाकर चौबे, केबीएल श्रीवास्तव पूर्व खिलाड़ी, ठाकुर प्रसाद पूर्व खिलाड़ी, डॉ जेपी शर्मा सचिव खो खो, बाबा यादव प्रधान, मोनू मिश्रा सभासद सिरसा,दीपू सिह,अनिल यादव,अरविंद यादव प्रधान, इंद्रेश सिंह यादव, लवकुश यादव,इंजीनियर इमितियाज अली,आशीष शुक्ला, सतीश शुक्ला, मधुकर तिवारी, पवन पटेल, संदीप यादव व सैकड़ों खिलाड़ी मौजूद रहे।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर युवकों को खेल का महत्व बताकर किया जागरूक

सहसों। युवा डेवलपमेंट वेलफेयर सोसाइटी सहसों कार्यालय पर रविवार को राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर जीवन में खेल का महत्व विषय पर जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी को बतौर मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए संस्था के अध्यक्ष चंद्रप्रकाश केसरवानी ने कहा युवाओं, बच्चों, बुढ़ों के लिए अच्छी सेहत का होना बहुत जरूरी है। एक स्वस्थ शरीर में ही अच्छे मस्तिष्क का निर्माण होता है शरीर को स्वस्थ रखने में खेल कूद और व्यायाम महत्वपूर्ण भूमिका में होते हैं। खेलों के द्वारा तन और मन दोनों ही स्वस्थ रहते हैं खेलों से मानव में धैर्य राहत क्षमता और मानवीय गुणों का विकास होता है खेल सभी के स्वस्थ जीवन में अहम भूमिका अदा करता है खासकर छात्र जीवन में इसलिए सभी को कुछ समय खेलकूद के लिए निकालना चाहिए। इसलिए हर युवा को स्वस्थ शरीर के लिए कोई न कोई खेल अथवा व्यायाम एवं योगा अवश्य करना चाहिए। इस अवसर पर उपस्थित भूमि विकास बैंक फूलपुर के अध्यक्ष वीरेन्द्र बहादुर सिंह ने कहा खेल जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है जीवन में शिक्षा के अलावा खेलों में भी रुचि बहुत जरूरी है। इसलिए शिक्षा संस्थानों की भी जिम्मेदारी बनती है कि वह छात्र छात्राओं को खेलों का महत्व समझाएं और खेलकूद की व्यवस्था को विद्यालय में सुचारू रूप से चलाएं जिससे बच्चों के शरीर का सर्वांगीण विकास हो सके। संगोष्ठी में प्रमुख रूप से ग्राम प्रधान विष्णु कुमार केसरवानी, राकेश सिंह, इं0 बद्री प्रसाद सिंह, डॉ अमित यादव, ओमप्रकाश सिंह, दीपांशु गुप्ता, संजीव शुक्ला सहित काफी संख्या में युवा उपस्थित रहे कार्यक्रम की अध्यक्षता शिव बाबू केसरवानी व संचालन डॉ प्रमोद गुप्ता ने किया।

भाजपा कार्यकर्ताओं का जीवन जनसेवा के लिए है समर्पितः दिलीप चतुर्वेदी

स्वास्थ्य स्वयसेवकों के साथ बैठक करते

रत्योरा। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं का पूरा जीवन जनसेवा, समाजिक उत्थान और भारत को परमवैभव पर पहुंचाने के लिए सर्वश्व त्याग समर्पण के साथ लगा रहता है। जो हम सब ने संगठन ही सेवा है के तहत शीर्ष नेतृत्व के निर्देश और योगी मोदी के आह्वान पर कोरोना वैश्विक महामारी के दौरान भोजन, राशन, सैनेटाइजर, पदवेश आदि के साथ अपने और अपनो के चिंता किए बिना सेवा करके सिद्ध किया है। अब हमे अपने और अपनो के साथ समाज गांव के लोगों को तीसरी लहर से बचाने मे अहम भूमिका निभाकर कोरोना मुक्त गांव के परिकल्पना को साकार करने के लिए तैयार रहना होगा। हम जनता के पास केवल बोट के लिए नही जाएंगे बल्कि निरंतर सेवा करके सरकारी योजनाओं की जानकारी देकर कोरोना के प्रति जनजागृति लाऐगें। हमारी सरकारो ने जितना कार्य जनता के लिए किया है उससे पुनः भाजपा की एतिहासिक सीटों से सरकार बनना निश्चित है। हमें अपनी सेवा जारी रखना है। उक्त बातें मुख्य वक्ता भारतीय जनता पार्टी प्रयागराज यमुनापार के जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी ने लेडियारी मंडल के स्वास्थ्य स्वमं सेवकों के कार्यशाला को सरस्वती शिशू मंदिर लेडियारी मे रविवार को सम्बोधित करते हुए कही। दिलीप कुमार चतुर्वेदी ने प्रत्येक गांव से आऐ एक महिला व एक पुरुष स्वास्थ्य स्वमं सेवकों के साथ मंडल के पदाधिकारियों को प्रशिक्षण देते हुए कहा पहले स्वमं मास्क,शोशल दूरी लक्षण दिखने पर होमक्वारटींन के साथ जांच कराकर डाक्टरों की सलाह लेना फिर अपने परिवार और गांव के लोगों को भी प्रेरित करने के साथ-साथ सभी 18 वर्ष के ऊपर के नागरिकों को वैक्सीनेशन कराने को प्रेरित कर नजदीकी टीकाकरण केंद्र पर पहुंचाने मे मदद के साथ साफ-सफाई,योग, प्राणायाम को प्रेरित करना होगा। किसी को लक्षण दिखते ही स्वास्थ्य कर्मियों को सूचित कर मदद् के लिए तत्पर रहना होगा।इसके साथ केन्द्र एवं राज्य सरकारों के योजनाओं का बखान किया। बैठक की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष लेडियारी श्यामबाबू केसरवानी ने करते हुए विषय को रख अंत मे आभार जताया। संचालन मंडल महामंत्री व कार्यक्रम संयोजक सूर्य प्रताप सिंह ने किया। इस अवसर पर शशिकांत तिवारी, राकेश मिश्र,सदानंद मिश्र, अनुपम सिंह, सुरेश सिंह, आभा देवी, किरण सिंह, आदर्श द्विवेदी, सूर्य प्रताप सिंह, राजेश्वर शुक्ला आदि भारी संख्या में स्वास्थ्य स्वमं सेवक मंडल पदाधिकारी रहे।

राजा बाबू गुलाब सिंह धरोहर पर होगा श्रमदान

पांच सितम्बर को समाज शेखर के नेतृत्व में होगा सफाई अभियान

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अमर क्रांतिकारी राजा बाबू गुलाब सिंह की रियासत तरौल के प्राचीन अवशेषों की रक्षा व विकास हेतु क्षेत्र के युवाओं ने कमर कस लिया है। भयहरणनाथ धाम के महासचिव सामाजिक कार्यकर्ता समाज शेखर वेद मार्गदर्शन में स्थलीय भ्रमण किया गया।बैठक कर तय हुआ कि अगले रविवार 5 सितम्बर को उक्त स्थल की सफाई साझा श्रम व जन भागीदारी से होगा। तदोपरांत ग्राम पंचायत, सरकार व जनप्रतिनिधियों व ग्रामवासियों की मदद से इस स्थल का संरक्षण व विकास कार्य हेतु ठोस पहल शुरू होगी। आजादी के अमृत पर्व को साकार रुप दिया जायेगा। इस पुनीत कार्य मे विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल के कार्यकर्ता युवा नेता कार्तिकेय सिंह व अंशुमान सिंह के संयोजन में स्थानीय पहल शुरू हो गई है। आगामी 5 सितम्बर को सभी साथियो से सुबह 10 बजे श्रमदान मे भाग लेने की अपील की गई है। इस अवसर पर आचार्य राजकुमार शुक्ल व बीजेपी के पूर्व वरिष्ठ पदाधिकारी व ग्राम के नागरिकगण मौजूद रहे।

ट्रांसफार्मर जलने से नेटवर्क बाधित

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। बीएसएनएल का ट्रांसफार्मर जल जाने के कारण नेटवर्क बाधित हो गया है जिससे उपभोक्ताओं को काफी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। बीते 26 अगस्त को पट्टी में स्थित बीएसएनएल का ट्रांसफार्मर अचानक जल गया जिससे बिजली बीएसएनएल के तक की लाइन न चल पाने के कारण कार्य बाधित हो गया है। उपभोक्ताओं को फंड ट्रांसफर करने की हेतु ओटीपी प्राप्त करने में असमर्थ पा रहे हैं जिसकी कंप्लेंट भी किया गया है परंतु शनिवार के दो बजे तक ट्रांसफार्मर नहीं लगाया गया।

महिला थाना प्रभारी को एसपी ने किया निलम्बित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के महिला थाना प्रभारी, निरीक्षक कल्पना गौतम के वायरल हो रहे वीडियो के सम्बन्ध में पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल द्वारा उक्त निरीक्षक को तत्काल प्रभाव से लाइन हाजिर कर दिया गया एवं इस संबंध में क्षेत्राधिकारी नगर को 24 घण्टे में सम्पूर्ण प्रकरण की तथ्यात्मक जांच कर रिपोर्ट प्रेषित करने हेतु निर्देशित किया गयाा। जांचोपरांत क्षेत्राधिकारी नगर द्वारा प्रेषित रिपोर्ट के आधार पर उक्त निरीक्षक को निलंबित कर दिया गया है तथा उनके विरुद्ध विभागीय कार्यवाही हेतु आदेश दिये गये हैं।

पुलिस ने गो तस्करी को जा रहे मवेशियों को पकड़ा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अंतू पुलिस ने गश्त के दौरान गो तस्करों द्वारा कंटेनर में भरे जा रहे मवेशियों को पकड़ा। किठावर पुलिस चौकी इंचार्ज एहसानुल हक और हेड गोरे लाल पांडेय ने मुखबिर की सूचना पर कन्टेनर में भरे लगभग दो दर्जन मवेशियों को मुक्त कराया। गो तस्कर पुलिस को देखकर अंधेरे का फायदा उठाकर फरार हो गये। पुलिस ने ट्रक कंटेनर को कब्जे में लेकर पशुओं को सुरक्षित गौशाला में भेजा। इस दौरान पुलिस की सतर्कता से कई मवेशियों की जान बच सकी। बता दें कि किठावर पुलिस चौकी क्षेत्र के छतरपुर शिवाला पशु चिकित्सक अस्पताल के पास से तस्करी हो रही थी।

रंजिश में आरोपियों ने महिला को पीटा

अखंड भारत संदेश

पट्टी प्रतापगढ़। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के नेवादा गांव की एक महिला ने पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर आरोप लगाया है कि पुरानी रंजिश के कारण आरोपियों ने महिला को जमकर मारा पीटा महिला ने मामले में इंसाफ की गुहार लगाई है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के नेवादा गांव की रहने वाली रेशमा पत्नी ताहिर ने कोतवाली में तहरीर देकर बताया कि शनिवार को बच्चों को भी विवाद को लेकर गांव के कुछ लोगों ने एक राय होकर उसके घर पर आये और गाली देने लगे महिला ने जब इसका विरोध किया तो आरोपियों ने महिला को जमकर मारा पीटा जिससे उसके शरीर में कई जगह चोटें आई। पीड़िता ने पुलिस को तहरीर देकर मामले में इंसाफ की गुहार लगाई है।

पोल से बाइक टकराई, बालक की मौत

अखंड भारत संदेश

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। थाना क्षेत्र के उमरौड़ा निवासी फरमूद का सत्रह वर्षीय बेटा शरफराज घर से तेज रफ्तार बाइक लेकर जेठवारा बाजार की ओर जा रहा था। जैसे ही वह आशापुर माइनर पुलिया के समीप पहुँचा, उसकी बाइक विद्युत पोल से टकरा गयी और वह गम्भीर रूप से घायल हो गया। घटना की सूचना पर पहुँचे परिजन उसे आनन फानन में जिला अस्पताल लेकर भागे। हालत नाजुक होने के कारण डॉक्टरों ने उसे स्वरूपरानी मेडिकल कॉलेज प्रयागराज रिफर कर दिया। इलाज के दौरान गम्भीर चोटे होने के कारण उसकी मौत हो गयी। मौत की सूचना पर घर मे कोहराम मच गया।

आरक्षण नीति व संविधान का हो रहा खुल्लम खुल्ला उल्लंघनः राजभर

नगर के प्लाजा पैलेस में बसपा की संगोष्ठी में बोले प्रदेश अध्यक्ष

पेंशन बहाली के लिये अटेवा ने प्रदेश अध्यक्ष को सौंपा ज्ञापन

प्रतापगढ़। अटेवा पेंशन बचाओ मंच के तत्वावधान में बीएसपी प्रदेश अध्यक्ष भीम राजभर को पुरानी पेंशन बहाली के लिये जिला संरक्षक डा0 विनोद त्रिपाठी के नेतृत्व में ज्ञापन सौंपा गया। इस दौरान अटेवा के अटेवियंस ने प्रदेश अध्यक्ष से मुलाकात कर कहा कि इस पुरानी पेंशन के मुद्दे को पार्टी के घोषणा पत्र में शामिल करके हम लाखों पेंशनविहीन कर्मचारियों की पुरानी पेंशन बहाल करवाएं। इस मौके पर जिलाध्यक्ष सी0पी0 राव, पार्वती विश्वकर्मा, सुरजीत कुमार, कृष्ण कुमार, मनीष दुबे, सीमा, गुलाब पति, संतोष शर्मा, रंजीत कुमार, तीरथ कुमार, कमलेश, राजकुमार आदि लोग मौजूद रहे।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बहुजन समाज पार्टी द्वारा आयोजित पिछड़ा वर्ग विचार गोष्ठी एवं एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन रविवार को नगर के प्लाजा पैलेस में संपन्न हुआ। विचार गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित बहुजन समाज पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भीम राजभर पिछड़ा वर्ग मौजूद रहे।

उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार की गलत नीतियों के चलते प्रदेश का छात्र, नौजवान, किसान, मजदूर, अगड़ा पिछड़ा दलित व्यापारी सभी वर्ग के लोग परेशान हैं। सरकारी नौकरियों में पिछड़े वर्गों के आरक्षण का मानक 27 प्रतिशत पूरा नहीं किया जा रहा है। राजभर ने आगे कहा कि भारत देश में आरक्षण नीति व संविधान का कोई खुल्लम खुल्ला उल्लंघन कर रहा है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार पिछड़े वर्ग के हक व अधिकारों पर डाका डालने का कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सम्मान सुरक्षा एवं विकास का रास्ता तय करने के लिए सबको बराबर हक व अधिकार प्राप्त करने के लिए आगामी विधानसभा के चुनाव में बहन जी को प्रदेश का पांचवीं बार मुख्यमंत्री बनाने का कार्य करें। इस मौके पर गुलाब चमार, अभिषेक प्रताप, सुशील गौतम, सोहन लाल पाल, रामबरन, महेंद्र बौद्ध, केके पाल, अश्वनी राणा, अमलेश गौतम, छोटेलाल बौद्ध आदि लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व जिला पंचायत सदस्य ओम प्रकाश मौर्या एवं संचालन मंडल प्रभारी कमलेश विश्वकर्मा ने किया।

जलनिकासी न होने से एक पखवारे से जलमग्न है भाऊपुर गांव

जलभराव की समस्या से निजात दिलाये जाने की मांग

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। किसान आंदोलन के अगुआ बाबा रामचंद्र प्रतापगढ़ के रूर गांव आए तो सबसे पहले भाऊपुर गांव में रुके थे और वही पर अपना आशियाना बनाया था, भाऊपुर ही वह स्थल है जहां पर उन्होंने जीवन की अंतिम सांस ली थी और वहीं पर उनकी समाधि भी वही बनी हुई है। ऐतिहासिक धरोहर के रूप में भले ही भाऊपुर गांव आज दर्ज नहीं है लेकिन वहां के लोग आज भी मूलभूत सुविधाओं से महरूम हैं। एक पखवारे से भाऊपुर गांव जलमग्न है और 25 से अधिक

घर इससे प्रभावित है, लेकिन जल निकासी की व्यवस्था न होने से लोग किसी तरह उसी में जीने के लिए विवश हैं।

आसपुर देवसरा विकासखंड के बिझला गांव के अंतर्गत भाऊपुर गांव में लगभग एक पखवारे पहले बारिश से पूरी तरीके से डूब गया। पहले गांव में पानी निकलने के लिए एक नाला हुआ करता था लेकिन नाले के बीचो-बीच रास्ता निकल जाने के कारण जल निकासी भी पूरी तरीके से बंद हो गई जिससे गांव के रहने वाले श्रीराम गौतम, रामशरण वर्मा, चौथी राम, राजबली, रामनारायण, माता दयाल, सभाजीत बर्मा, राम नारायण वर्मा, रामलाल, झल्लू, शिव कुमार, रामजतन अरविंद आदि के घर व खेत पूरी तरीके से जलमग्न हो गए। कई घर तो ऐसे हैं जिनके घर के अंदर तक पानी घुस आया है, लेकिन अंदर से बाहर तक सिर्फ पानी होने के कारण किसी तरह ग्रामीण अपने घर में रहने के लिए अभिशप्त हैं। गर्मी के समय में जलजमाव के कारण कई बीमारियां पनपने का डर तो बना हुआ है। साथ ही साथ सांप बिच्छू और अन्य जहरीले जंतु भी घर में घुस जा रहे हैं। कई किसानों की तो फसल ही पूरी तरीके से डूब चुकी है। बाग से लेकर खेत और खेत से लेकर घर तक पानी ही पानी नजर आ रहा है। अब देखना यह होगा कि प्रशासन इसके संबंध में ठोस कदम कब उठाता है और जल निकासी की व्यवस्था करके कब इन ग्रामीणों को जलजमाव की समस्या से निजात दिलाता है।

जन्माष्टमी पर पूरे भुलई धूती में होगा विविध आयोजन

पट्टी, प्रतापगढ़। श्री कृष्ण जन्माष्टमी बाबा बंशीधर धाम पूरे भुलई धूती में धूमधाम से मनाया जाएगा। कार्यक्रम के आयोजक अमित तिवारी और अनूप तिवारी ने बताया कि यह भगवान श्रीकृष्ण की चौथी जन्माष्टमी महोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है जिसमें क्षेत्रीय भक्तजन जन्माष्टमी महोत्सव कार्यक्रम में भाग लेकर श्रद्धा के साथ जन्माष्टमी में नाचते गाते हैं। भगवान श्री कृष्ण की महिमा बहुत ही अपरंपार है। कार्यक्रम के निवेदक राजमणि तिवारी चंद्र मणि तिवारी राकेश तिवारी तथा जितेंद्र रितेश आशीष कार्तिक दिव्य शिवांश अक्षत शाश्वत और भक्तजन लोगों का स्वागत करने के लिए अभी से ही उत्सुक दिखाई दे रहे हैं।

ब्राह्मण महापंचायत के सफल आयोजन के लिये बनी रणनीति

27 सितम्बर को होगा आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। राष्ट्रीय परशुराम सेना द्वारा 27 सितंबर को शहर के हादी हाल में आयोजित ब्राह्मण महापंचायत के संबंध में शहर स्थित स्नेह होटल में प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रदीप शुक्ला एडवोकेट ने ब्राह्मण महापंचायत कार्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी दी।उन्होंने बताया कि ब्राह्मण महापंचायत में प्रतापगढ़ सहित लगभग 23 जनपदों के ब्राह्मणों को कार्यक्रम में आमंत्रित किया जा रहा है। ब्राम्हण महापंचायत के माध्यम से लगभग पांच हजार लोगों को एक मंच पर बुलाना है जिससे सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक परिदृश्य में ब्राह्मण समाज की सहभागिता मजबूत की जा सके। प्रेसवार्ता में जिलाध्यक्ष अनिल पांडे स्वतंत्र ने कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में जानकारी दी। मंडल अध्यक्ष संजय शुक्ला ने राष्ट्रीय परशुराम सेना द्वारा किए जा रहे

कार्यों के विषय में अवगत कराया। प्रेस वार्ता में जिला मीडिया प्रभारी दुबे, जिला कोषाध्यक्ष शैलेश मिश्रा, नगर सचिव अभिषेक तिवारी, सुमित पांडे, विनय तिवारी, देवेश तिवारी सहित मौजूद रहे।

कबड्डी प्रतियोगिता में नावेल इंटरनेशनल बनी विजेता

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। विकास खण्ड बाबा बेलखरनाथ धाम के श्रीनाथपुर में आयोजित 55 किलो भार वर्ग की एक दिवसीय कबड्डी प्रतियोगिता में नावेल इंटरनेशनल स्कूल की टीम विजेता रही, जबकि मरुआन की टीम उपविजेता घोषित की गई। विजेता तथा उपविजेता टीम को आयोजकों द्वारा शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया। श्रीनाथपुर गांव में शनिवार को आयोजित 55 किलो भार वर्ग की डे नाईट कबड्डी प्रतियोगिता में कुल 26 टीमों ने भाग लिया जिसमें फाइनल मैच नावेल इंटरनेशनल स्कूल तथा मरुआन टाइगर्स के बीच खेला गया, जिसमें नावेल इंटरनेशनल स्कूल की टीम ने मरुआन की टीम को 9 अंकों से हरा दिया। विजेता टीम के कप्तान हर्ष तथा उपविजेता टीम के कप्तान आदिल को चैंपियनशिप की ट्रॉफी प्रदान की गई। प्रतियोगिता के निर्णायक राकेश प्रताप सिंह, अनीस अहमद, राजीव सिंह उर्फ छत्रीय तथा तबारक खान रहे। कमेंटर के. के. शर्मा तथा मोहम्मद आजाद, स्कोरर कालिका प्रसाद तिवारी व मोहम्मद सलमान रहे। समापन समारोह के अतिथि भाजपा नेता योगेश योगी ने विजेता व उपविजेता टीम को चैंपियनशिप ट्रॉफी प्रदान करते हुए कहा कि खेल से मानसिक विकास के साथ सामाजिक सद्भाव भी बनता है। इस मौके पर आयोजक आमिर खान, महमूद आलम, अब्दुल वाहिद, गोल्डी शर्मा, इमरान प्रधान, सलमान खान आदि मौजूद रहे।

जमीनी रंजिश में महिला की गला दबाकर हत्या

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। जमीनी रंजिश में पड़ोसियों ने एक महिला की गला दबाकर हत्या कर दिए। घर वापस लौटने पर उसके बेटे ने घर मे माँ का शव देखकर बिलखने लगा। बेटे की तहरीर पर पुलिस ने आरोपियों पर हत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया है।

आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र के विनैका गांव निवासी गीता (36) पत्नी हरीलाल कि शनिवार की देर रात

घर में मचा कोहराम, आरोपियों की तलाश में जुटी पुलिस

करीब ग्यारह बजे गला दबाकर हत्या कर दी गई। मृतक के पुत्र मुकेश कुमार ने आसपुर देवसरा पुलिस को तहरीर देकर बताया कि गांव के लल्लू निषाद पुत्र चौथीराम, बलिराम निषाद पुत्र लल्लू निषाद अमर बहादुर निषाद पुत्र लूड़ी निषाद राजेश निषाद व मोहित पुत्रगण देबर निषाद व कर्मा देवी पत्नी देबर निषाद ने मां गीता देवी को आरोपियों ने घर में घुसकर साड़ी से गला दबाकर हत्या कर दी। मृतक का पुत्र मुकेश पीली नदी में मछली पकड़ने गया था। वापस आया तो घर में मां की लाश देखकर भौचक्का हो उठा। मुकेश ने बताया कि जब पड़ोसी लोग मां की हत्या करके जा रहे थे तो चाची जड़ावती देवी ने लोगों को पहचान लिया। मृतक का पति सूरत शहर रहकर मजदूरी का काम करता है।

ग्राम प्रधान ने जनता को समर्पित किया तक्षकधाम रोर

अखंड भारत संदेश

बाघराय, प्रतापगढ़। बाघराय के रोर प्रधान शीला शशि पांडे ने तक्षक धाम रोर का सौंदर्यीकरण गेट इंटरलाकिंग सड़क, प्रकाश, पेयजल व बरसात से बचने के लिए फाइबर शेड व अन्य कार्य करके जनता का दिल जीत लिया।

इस दौरान प्रधान रोर शीला शशि पांडे ने नवनिर्मित पूजा स्थल का फीता काट कर जनता के हवाले कर दिया। इस पुनीत कार्य से गांववासी खुश हैं। इस

मौके पर तक्षक धाम रोर के पुजारी हरिशंकर शुक्ला व पुजारी राम लखन, पूर्व प्रधान व रामबाबू दुबे, मान सिंह, राजेंद्र प्रसाद शुक्ल, प्रवीण दुबे, कप्तान शुक्ला, विवेक शुक्ला, अतुल सिंह, हिमांशु शुक्ला, गामा यादव आदि सैकड़ों ग्रामवासी मौजूद रहे।

अपहृत बालकों को पुलिस ने किया बरामद, अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देशन में थाना मानिकपुर पुलिस को थाना क्षेत्र मानिकपुर के ग्राम तरी मऊदारा से फिरौती हेतु अपहृत दो अबोध बालकों को सकुशल बरामद करते हुए अभियुक्त को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त हुई।

बता दें कि 25 अगस्त को थाना क्षेत्र मानिकपुर के ग्राम तरी मऊदारा के मनीष कुमार पटेल पुत्र मातादीन पटेल के दो अबोध बालकों को एक व्यक्ति पवन कुमार भगत पुत्र रामचन्दर निवासी गढ़ अमिरता थाना सोनवर्षा राज, जिला सहरसा, बिहार द्वारा घुमाने के बहाने से अपनी कार में बैठाकर अपहरण कर लिया गया था, उसके उपरांत उक्त पवन कुमार भगत द्वारा अपहृत बच्चों के पिता से फिरौती की मांग की गई थी। इस संबंध में वादी द्वारा दी गई तहरीरी सूचना के आधार पर अभियोग पंजीकृत किया गया था।

इसी क्रम में प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर सुभाष कुमार यादव व व0उ0नि0 नन्हेलाल यादव मय टीम द्वारा खनवारी नहर पुलिया पनिगौं थाना मानिकपुर से सुबह सवा चार बजे अभियुक्त पवन कुमार भगत पुत्र रामचन्दर नि0 गढ़ अमिरता थाना सोनवर्षा राज, जिला सहरसा राज्य-बिहार उम्र-करीब 35 वर्ष को उसकी हुण्डई कार के साथ गिरफ्तार करते हुये दोनो अपहृत बालकों को सकुशल बरामद किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त पवन कुमार भगत उपरोक्त ने पूछताछ में बताया की मैं मूल रूप से बिहार राज्य का रहने वाला हूं तथा भवन निमार्ण की ठेकेदारी का कार्य करता हूं एवं विगत कुछ वर्षों से कुण्डा, मानिकपुर, हीरागंज आदि स्थानों पर रहकर ठेकेदारी का कार्य कर रहा हूं। इसी दौरान मनीष कुमार पटेल के साले अजय कुमार पटेल उर्फ बब्बू नि0 कोहारन का पुरवां पनिगौं थाना मानिकपुर की बेटी से मेरा प्रेम प्रसंग हो गया तथा वह मेरे साथ रहने लगी जब कि मेरी पूर्व से एक पत्नी व तीन बच्चे है, जिससे मनीष कुमार पटेल जो कि रिश्ते में उसका फूफा है वह मुझसे नाराज रहने लगा था, हाल के दिनों में वह मुझसे अलग अपने पिता के साथ रहने लगी थी तथा हमारे बीच मनमुटाव चल रहा था और उसके पिता मेरा बकाया पैसा नही दे रहे थे जिसको मै काफी समय से मांग रहा था, मुझे लगा कि मनीष कुमार पटेल की वजह से वह मुझसे अलग रह रही है तथा उसके पिता मेरा बकाया पैसा नही दे रहे हैं। मै कभी-कभार मनीष कुमार पटेल के घर आता-जाता था जिससे उसके बच्चे मुझसे घुल-मिल गये थे। दिनांक 25 अगस्त को सुबह सात बजे मैं मनीष कुमार पटेल के घर गया तथा उसके दोनों बच्चों को घुमाने के बहाने अपनी हुण्डई आई-10 कार में बैठा कर ले कर चला गया जिसके बाद मैनें मनीष कुमार पटेल से 10 लाख रुपये व अजय कुमार पटेल उर्फ बब्बू से अपना बकाया पैसा दिलाने की मांग की थी। मैं 29 अगस्त को सुबह जल्दी ही पनिगौं के पास नहर पुलिया पर अपनी कार व बच्चों के साथ इस सोच के साथ आया था कि मनीष कुमार पटेल को फोन कर पैसे प्राप्त कर बच्चे वापस कर चला जाऊंगा लेकिन मुझे बच्चो व कार सहित पुलिस द्वारा पकड़ लिया गया। पुलिस टीम में प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर सुभाष कुमार यादव, व0उ0नि0 नन्हे लाल यादव, उ0नि0 प्रदीप कुमार, हे0का0 रविन्द्र यादव, कां0 आयुष, कां0 मनीष, कां0 अभिषेक पाण्डेय, कां0 आशीष कुमार, म0कां0 शबनम चौहान व म0कां0 टीनू कुमारी व कां0 चालक का0 संतोष कुमार राय थाना-मानिकपुर शामिल रहे।

उत्सव के रूप में मनेगा मातृ वंदना सप्ताह

आकर्षण का केंद्र बनेंगे हर ब्लाक पर बनने वाले सेल्फी कार्नर

अखंड भारत संदेश

भदोही। पहली बार गर्भवती धात्री महिलाओं के बेहतर स्वास्थ्य देखभाल और पोषण के लिए पूरे देश में चलायी जा रही प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना को गति प्रदान के लिए प्रदेश में एक से सात सितम्बर तक मातृ वंदना सप्ताह मनाया जाएगा । इस सप्ताह को एक उत्सव के रूप में मनाने की योजना है, जिसके तहत सप्ताह के हर दिन अलग-अलग गतिविधियाँ आयोजित की जायेंगी । हर साल मनाये जाने वाले इस सप्ताह की इस बार की थीम 'मातृ शक्ति-राष्ट्र शक्ति' निर्धारित की गयी है । इस बार इस सप्ताह के दौरान गर्भवती को कोविड टीकाकरण के प्रति विशेष तौर पर जागरूक करने की भी योजना है । मुख्य चिकित्साधिकारी डाक्टर संतोष कुमार चक ने बताया कि इस सम्बन्ध में पत्र भेजकर सप्ताह की निर्धारित गतिविधियों के अनुरूप इसके आयोजन के निर्देश दिए हैं । उन्होंने कहा है कि सप्ताह के दौरान सभी पात्र गर्भवती व धात्री महिलाओं को लाभ पहुँचाने पर जोर दिया जाए । जनसामान्य तक ज्यादा से ज्यादा योजना का प्रचार-प्रसार हो और स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा दिया जाए । इसके अलावा कोविड टीकाकरण के प्रति गर्भवती को विशेष तौर पर जागरूक किया जाए । सप्ताह के दौरान गर्भवती को उचित आराम व पोषण की जरूरत के बारे में समझाया जाये और नियमित प्रसव पूर्व देखभाल की आवश्यकता बताई जाए क्योंकि एक हृष्ट-पुष्ट शिशु के लिए जरूरी है कि गर्भवती के पोषण का खास ख्याल रखा जाए । हरी साग-सब्जियों व मौसमी फल को नियमित भोजन में शामिल किया जाए । गर्भवती को यह भी बताया जाए कि संस्थागत प्रसव में ही माँ-बच्चे की सुरक्षा निहित है व शिशु टीकाकरण बच्चे के बेहतर स्वास्थ्य के लिए जरूरी है।

चुनाव में होता है बूथ अध्यक्षों की महत्त्वपूर्ण भूमिका : अशोक

पालिकाध्यक्ष ने किया प्रजापतिपुर बूथ का सत्यापन

अखंड भारत संदेश

भदोही। भाजपा शीर्ष नेतृत्व के निर्देश पर 25 से 31 अगस्त तक बूथ सत्यापन अभियान कार्यक्रम चलाया जा रहा है। अभियान के तहत रविवार को नगर पालिका परिषद अध्यक्ष एवं सत्यापन प्रभारी अशोक कुमार जायसवाल ने भदोही ग्रामीण मंडल के प्रजापतिपुर बूथ का सत्यापन किया।

इस दौरान पालिकाध्यक्ष श्री जायसवाल ने प्रजापतिपुर गांव के बूथ संख्या 396 व 398 का व शक्ति केंद्रों का सत्यापन किया। बूथ अध्यक्षों को उनकी जिम्मेदारी बताई। पार्टी की ओर से निर्धारित विभिन्न कार्यक्रमों की रूपरेखा और उनकी तैयारियों पर भी विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बूथ अध्यक्षों को समझाया कि चुनाव में उनकी भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है। इसी के साथ आगामी चुनाव की चर्चा भी की गई। साथ ही केंद्र व प्रदेश सरकार की योजनाओं के बारे में भी बताया गया। इस मौके पर भाजपा भदोही ग्रामीण मंडल अध्यक्ष अशोक पाठक, अन्नू दुबे, सरोजधर दुबे, शशिधर दुबे, विजय पाठक, गिरीश मिश्रा, दयाशंकर मिश्र, रवि मिश्रा, रामराज प्रजापति आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

श्री कृष्ण जन्म उत्सव कार्यक्रम आज

अखंड भारत संदेश

भदोही। अंर्तराष्ट्रीय हिंदू परिषद जिला इकाई के तत्वाधान में श्री कृष्ण जन्म उत्सव कार्यक्रम के निमित्त भदोही नगर के श्री महादेव मंदिर के प्रांगण में संपन्न हुई। बैठक में बोलते हुए संगठन के विभाग अध्यक्ष संतोष दुबे ने कहा कि बच्चे ही आगे मिशन के तहत अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दू परिषद् भदोही के प्रमुख आयाम राष्ट्रीय महिला परिषद व ओजस्विनी के तत्वाधान में श्री कृष्ण जन्म उत्सव कार्यक्रम के तहत 30 अगस्त की सुबह 11 बजे श्री राधा कृष्ण स्वरूप सज्जा प्रतियोगता का कार्यक्रम भदोही नगर के भरत पैलेस चौराहे के पास श्री महादेव मंदिर के प्रांगण में होने वाले कार्यक्रम की विधिवत तैयारी कर ली गई है। जिन्हे फेस बुक लाइव कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण जन्म उत्सव कार्यक्रम पूरे जिले में बृहद ढंग से मनाया जाएगा और नौजवानों का आह्वान करते हुए कहा कि श्री कृष्ण के आदर्शों पर चलकर हिंदू धर्म विरोधी राक्षसों का समूह नाश करने के लिए आगे आएं। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंर्तराष्ट्रीय हिंदू परिषद के जिला अध्यक्ष रमाकांत त्रिपाठी ने किया तथा संचालन जिला महामंत्री धीरेंद्र दुबे ने की। बैठक में सर्वश्री राष्ट्रीय बजरंग दल के जिला अध्यक्ष उमेश सिंह, गोपाल दुबे, राष्ट्रीय व्यापार परिषद के जिला अध्यक्ष नरेंद्र बहादुर सिंह, प्रीतेश दुबे, सुशील कुमार श्रीवास्तव, शिव नारायण पांडे, अंबुज दुबे, कौशल किशोर श्रीवास्तव, केपी गुप्ता, जितेंद्र दुबे, रोमेश दुबे, चंदन मौर्या, शिवमंगल सिंह, पंचमराम जयसवाल आदि लोग उपस्थित रहे।

गठित हुई नगर कमेटी अध्यक्षो को मिला दायित्व

अखंड भारत संदेश

भदोही। जनपद में संगठन को मजबूत बनाने के लिए नगर कमेटी का गठन करते हुए नगर अध्यक्षों की नियुक्ति करते हुए उन्हें दायित्व सौंपा गया है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अनुमोदन पर जिला अध्यक्ष माबूद खान ने उपेंद्र भारती को भदोही, परवेज हाशमी को गोपीगंज, गोवर्धन सेठ खमरिया, जान मोहम्मद ज्ञानपुर, सुशील कुमार मौर्य सुरियावां व इरशाद अहमद लल्ला को घोसिया नगर अध्यक्ष का दायित्व सौंपा गया। नव नियुक्त नगर अध्यक्षों को बधाई देते हुए प्रदेश नेतृत्व का आभार व्यक्त किया और कहा कि कर्मठ और निष्ठावान लोगों को पार्टी मे महत्वपूर्ण स्थान दिया है। सभी अध्यक्ष पार्टी के निर्देश का अनुपालन करते हुए अपनी जिम्मेदारी का बखूबी निर्वहन करेंगे। जिला महासचिव मृत्युंजय पांडेय ने कहा कि प्रियंका गांधी के निर्देशन में पार्टी के प्रति समर्पित और निष्ठावान कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी दी जा रही है। स्वालेह अंसारी, राजेश विश्वकर्मा, आनंद, मोइनुद्दीन आदि ने नवनियुक्त अध्यक्षों को बधाई दी।

जमीनी विवाद को लेकर मारपीट

अखंड भारत संदेश

चौरी/भदोही। क्षेत्र के असोगापुर में जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों मे जमकर मारपीट हो गयी। जिससे घटना में एक अधेड़ को मारपीट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। पुलिस ने घायल को इलाज के लिए चिकित्सालय भेज दिया। बताया जाता है कि गाव निवासी कैलाश बिश्वकर्मा 56 वर्ष का पड़ोसियों से काफी दिनों से जमीनी विवाद चल रहा था। वही रविवार को सुबह अचानक एक राय होकर पड़ोसियों ने उक्त अधेड़ को लाठी डंडा व कुल्हाड़ी से मारपीट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। पुलिस ने घायल को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया। पुलिस ने पीड़ित के तहरीर पर तीन लोगो के खिलाफ मुकदमा दर्ज करते हुए मामले की जाच कर रही है।

सपा मुखिया के आगमन को लेकर सपाईयों ने की बैठक

पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सूबे के पूर्व सीएम के कार्यक्रम को सफल बनाने का किया गया आह्वान

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सूबे के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के 5 सितंबर को जिले में आएंगे। उनके आगमन को लेकर रविवार को पार्टी के जिला कार्यालय में तैयारी के सिलसिले में बैठक की गई। जिसमें सभी को कार्यक्रम की सफलता के लिए जिम्मेदारी दी गई और कार्यक्रम को सफल बनाने का आह्वान किया गया।

इस दौरान पार्टी के निवर्तमान जिलाध्यक्ष बाल विद्या विकास यादव ने कहा कि 5 अगस्त को शिक्षक दिवस है। शिक्षक दिवस के मौके पर समाजवादी शिक्षक सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो.बी.पाडेय द्वारा इनारगांव डुहिया में शिक्षकों को सम्मानित करने के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। जिसमें शामिल होने के लिए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सूबे के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव मुख्य अतिथि के रूप में आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि इतिहास का वह पहला दिन होगा कि जब शिक्षक दिवस पर भगवान भोलेनाथ के दरबार बाबा सेमराधनाथ एवं माता सीता समाहित तपस्थली एवं अदभुत विजेता लवकुश के गुरु महर्षि वाल्मीकि के कर्मभूमि से समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव शिक्षकों को सम्मानित एवं उद्बोधन करेंगे। श्री यादव ने कहा कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के आगमन की तैयारी में सभी लोग जुट जाएं। जिले में उनका जोरदार स्वागत होना चाहिए। इस मौके पर पूर्व विधायक जाहिद बेग, पूर्व जिलाध्यक्ष प्रदीप यादव, मो.आरिफ सिद्दिकी, हसनैन अंसारी, अनिल कुमार सिंह, शोभनाथ यादव, संतोष यादव, इंजि. विजेंद्र पासी, लवकुश यादव, धर्मेंद्र मिश्र पप्पू, रविशंकर प्रसाद, इबरान खां, कमलाशंकर महतो, कमलेश प्रजापति आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

एक दर्जन युवाओं ने सपा की सदस्यता ग्रहण किया

अखंड भारत संदेश

भदोही। उत्तर प्रदेश में सत्ता परिवर्तन की लहर चल रही है। जनता सपा की ओर देख रही है। यह बाते रविवार को सपा जिलाध्यक्ष विकास यादव ने कही। उन्होंने कहा कि सपा में तेजी से युवा जुड़ रहे है। रविवार को भी उनके अजीमुल्लाह चौराहे स्थित आवास पर दर्जन भर कार्यकर्ताओं ने सपा की सदस्यता ली। दिन के 10 बजे ब्लाक क्षेत्र के हरिचंदनपुर अमवा निवासी रंजीत वर्मा गोलू छात्र संघ मंत्री के नेतृत्व में एक दर्जन युवा कार्यकर्ता अखिलेश यादव जिंदाबाद, विकास यादव जिंदाबाद के नारे लगाते आवास पर पहुंचे और सपा की सदस्यता ली। निवर्तमान जिलाध्यक्ष ने सभी का स्वयं फूलमाला पहना कर स्वागत किया। युवाओं का जोश व उत्साह देख उन्होंने सपा मुखिया से भेट कराने का भी वादा किया। सपा नेता रामराज दद्दा व सुनील पटेल ने भी युवाओं का स्वागत किया। सदस्यता ग्रहण करने में अर्जुन यादव, चंद्रेश वर्मा, शिवम पटेल, चमन पटेल, अमरेश पटेल, अवनीश पटेल, इंद्रजीत पटेल, दिनेश पटेल आदि उपस्थित रहे।

भाजपा सरकार में खिलाड़ियों को नहीं किया जा रहा प्रोत्साहित : विकास

मेजर ध्यानचंद की जयंती पर सपाइयों ने घेरा बनाकर सरकार को घेरा

अखंड भारत संदेश

भदोही। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देश पर मेजर ध्यानचंद की जयंती पर सपाइयों ने राष्ट्रीय खेल दिवस के रुप में मनाया। क्षेत्र के मुसीलाटपुर गांव में स्थित जिला स्टेडियम में खिलाड़ियों ने घेरा बनाकर भाजपा सरकार को घेरने का काम किया।

इस दौरान पार्टी के निवर्तमान जिलाध्यक्ष बाल विद्या विकास यादव ने कहा कि गांवों में प्रतिभावान खिलाड़ियों की कमी नहीं है। लेकिन सरकार द्वारा खिलाड़ियों को प्रोत्साहित न करने के कारण उनकी प्रतिमा निखरने से पहले ही दब जा रही है। पैसों के अभाव में वे अपनी प्रतिभा का जौहर दिखाने से वंचित रह जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी की सरकार के समय खिलाड़ियों की प्रतिभा को निखारने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। लेकिन भाजपा राज में तो सिर्फ धर्म व जाति को बांटने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। श्री यादव ने कहा कि सपा की सरकार बनने के बाद खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए योजनाएं बनेंगी। इस मौके पर पार्टी के जिला महासचिव हृदय नारायण प्रजापति, धर्मेंद्र मिश्र पप्पू, रामराज यादव दद्दा व रवि यादव आदि मौजूद रहे।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर आयोजित हुआ वेबिनार

घोसिया/भदोही। केशव प्रसाद मिश्र राजकीय महिला महाविद्यालय औराई में हाकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद जी की जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय खेल दिवस पर महाविद्यालय में वेबिनार का आयोजन किया गया। जिसका विषय था जीवन में खेल का महत्व इस दौरान महाविद्यालय की छात्राओं ने ऑनलाइन बढ़ चढ़कर अपनी हिस्सेदारी किया।कार्यक्रम के संयोजक और शारीरिक शिक्षा विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर जय कुमार ने सर्वप्रथम विषय प्रवर्तन करते हुए मेजर ध्यानचंद के जीवनी व उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने छात्राओं से पठन-पाठन के अतिरिक्त क्रीड़ा पर भी विशेष ध्यान देने की बात की। कहा कि खेलकूद से शरीर का सर्वांगीण विकास होता है। इसके माध्यम से हम राष्ट्र के उन्नयन में अपना योगदान दे सकते हैं। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ वृज किशोर त्रिपाठी जी ने खेल के महत्वपूर्ण बिंदुओं, खेलों के इतिहास में मेजर ध्यानचंद जी की जीवनी से लेकर ओलंपिक में हॉकी के गोल्ड इतिहास के बिंदुओं पर प्रकाश डाला।उनहोंने स्वास्थ्य से जुड़ी महत्वपूर्ण बातों व खेल का जीवन में महत्व के विभिन्न पहलुओं को छात्राओं से साझा किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकगण ऑनलाइन उपस्थित रहे।

विकास में बाधक बने जनप्रतिनिधियों का होगा विरोध : डीएम सिंह

वृहद हस्ताक्षर अभियान का कारवां पहुंचा बभनौटी बाजार व उचेठा गांव में

अखंड भारत संदेश

औराई। जिले के स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार एवं जिला अस्पताल की मांग को लेकर युवा नेता डीएम सिंह गहरवार द्वारा चलाए जा रहे वृहद हस्ताक्षर अभियान का कारवां रविवार को बभनौटी बाजार के उचेठा कामाख्या मंदिर तक पहुंचा। जहां पर अभियान में शामिल लोगों का वहां के लोगों ने जोरदार स्वागत किया और हस्ताक्षर कर अभियान का हिस्सा बने।इस दौरान युवा नेता डीएम सिंह गहरवार ने कहा कि यह सिर्फ हस्ताक्षर अभियान नहीं है बल्कि दलाल, चोर, बेईमान, भगोड़ों को भस्म करने का महायज्ञ चल रहा है। ऐसे जनप्रतिनिधियों का खुल कर विरोध किया जाएगा। जो जनपद के विकास में बाधक बने हुए हैं। ऐसे लोगों ने न तो जनपद में विश्वविद्यालय की स्थापना करवाई और न ही अस्पताल दिया और न ही युवाओं के रोजगार के लिए कोई ठोस कदम उठाया। ऐसे शोषणकर्ताओं का परित्याग करना होगा। उन्होंने कहा कि औराई में शिलापट्ट पर नाम तो बड़े-बड़े लिखे हुए देखने को मिल रहा है। लेकिन कार्य तो हुआ ही नहीं है। ऐसे में युवाओं को चाहिए कि वह इकट्ठा हो और सत्ता ही नही अपितु व्यवस्था को बदले।।युवा जागे और अपने अधिकार के लिए खड़े हो। उनके साथ हमारी पूरी टीम रहेगी। ऐसे लोगों को 2022 में सबक सिखाना होगा। इस मौके पर राकेश गुप्ता, शुभम सिंह, राजू कनौजिया, राज गुप्ता, प्रभाकर सिंह, शिव नरेश यादव, संदीप पांडेय, महेंद्र यादव, त्रिवेणी सिंह, मनीष सिंह,,शिवम आदि लोग प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

बैंक मित्रो की होती है भूमिका अहम

मूंशीलाटपुर में कार्यशाला का हुआ आयोजन

ज्ञानपुर। वित्त मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आयोजित जन.सुरक्षा अभियान के तहत आज अग्रणी जिला प्रबंधक कार्यालय द्वारा आरसेटी भदोही द्वारा मूसीलाटपुर में जनपद भदोही में कार्यरत बैंक मित्रों की एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि नवागत एलडीएम अभिषेक कुमार जी ने उपस्थित सभी बैंक मित्रों को उनकी भूमिकाओं से अवगत कराया और हिदायत भी दी कि बैंक मित्र कभी भी ऐसी कोई भी गतिविधि न करें जिससे की बैंक की छवि धूमिल हो। यूनियन बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय प्रयागराज से आये हुए वरिष्ठ प्रबंधक राकेश कुमार ने बैंक मित्रों को वित्तीय समावेशन के विषय में विस्तार से बताया और साथ ही साथ बैंक मित्र क्या करें क्या न करें के बारे में बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे आरसेटी निदेशक ने प्रधानमंत्री जन धन योजना से संबंधित अटल पेंशन योजना एवं सामाजिक सुरक्षा बीमा योजनाओ पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन कर रहे आरसेटी के सीनियर ट्रेनिंग कोऑर्डिनेटर देवेंद्र दुबे ने उपस्थित सभी बैंक मित्रों से वित्तमंत्रालय द्वारा संचालित कार्यक्रम जन सुरक्षा अभियान में अधिक से अधिक अटल पेंशन योजनान्तर्गत खाता खोलने का अनुरोध किया ताकि भारत सरकार के इस महत्वाकांक्षी योजना को अधिक से अधिक सार्थक बनाया जा सके। इस अवसर पर वित्तीय परामर्शदाता विनीत सिंह अभय पांडेय लवकुश श्रीचंद बिन्द सहित लगभग 150 बैंक मित्र उपस्थित रहे।

भाजयुमो जिला अध्यक्ष का किया गया स्वागत

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज। नगर में भारतीय जनता युवा मोर्चा के नव नियुक्ति जिला अध्यक्ष कपिल मिश्रा का राजमार्ग बड़ा चौराहा पर स्वागत किया गया। गोपीगंज बड़ा चौराहा पर मोहित कुमार बाबू और शिवम सेठ के नेतृत्व में जुटे पार्टी कार्यकर्ताओं ने स्वागत और अभिनंदन कर अंग वस्त्रम, स्मृति चिन्ह भेट किया गया। इस मौके पर अरुण कुमार मिंकू, अमित जायसवाल, जितेंद्र गुप्ता, वीरेंद्र पांडेय, प्रज्वल बरनवाल, संस्कार जायसवाल, रितेश गुप्ता, करन गुप्ता, राज सोनी, संदीप कुमार, बाबू राहुल चौबे, श्रेयांश आदि मौजूद रहे।

गंगा उतराई के नाम पर वसूली कर रहे है मोटर बोट संचालक

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज। रामपुर गंगा घाट पर स्ट्रीमर व मोटर बोट संचालक यात्रियों से गंगा उतराई के नाम पर जबरन वसूली की जा रही है। जबकि शासन द्वारा इसकी निःशुल्क व्यवस्था की गई है। पीपा पुल बंद होने के बाद जिम्मेदार विभाग निःशुल्क स्टीमर व मोटरबोट की व्यवस्था की जाती है, बावजूद इसके साइकिल व साइकिल सवार से 20 से 30 रुपया व पैदल यात्री से दस रुपया ले ले रहे हैं।लगभग एक दशक पूर्व गंगा घाट से आर पार आवागमन को निःशुल्क घोषित कर पैसा वसूली बंद कर दी गई थी। लोगों को आने जाने के लिए निःशुल्क व्यवस्था की गई चाहे पीपा पुल हो या नाव संचालन। लोक निर्माण विभाग जहा ठंडी व गर्मी मौसम मे पीपा पुल की व्यवस्था करता है।

महंत अवेद्यनाथ की मनेगी 7वीं पुण्यतिथि, 12 से 18 सितंबर तक होगा विविधि कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

भदोही। विश्व हिन्दू महासंघ जिला इकाई की बैठक मर्यादपट्टी में स्थित महादेव मंदिर में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता संघठन के जिला अध्यक्ष प्रमोद मिश्र तथा संचालन जिला महामंत्री रमेश चन्द्र प्रजापति ने की। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए जिला अध्यक्ष प्रमोद मिश्र ने कहा की संघठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष महराज योगी आदित्य नाथ के निर्देश पर व प्रदेश अध्यक्ष भिखारी प्रजापति की अध्यक्षता में पूरे प्रदेश में संघठन के संस्थापक रहे पूर्व गोखनाथ मंदिर के पीठाधिश्वर ब्रहमलीन महराज अवेद्यनाथ जी की 7वीं पुण्य तिथि साप्ताहिक पुण्य तिथि के रूप में 12 सितम्बर से 18 सितम्बर तक पूरे उत्तर प्रदेश में मनाई जायेगी।

भदोही जनपद में 14 सितम्बर दिन मंगलवार स्थान साहिद झूरी सिंह स्मारक परउ पुर में मनाई जायेगी। जिसमें विश्व हिन्दू महासंघ के अधिवक्ता प्रकोष्ट के प्रदेश महामंत्री बीपी सिंह मुख्य अतिथि रहेंगे। जिला अध्यक्ष ने जनपद के सभी पदाधिकारी व सभी प्रकोष्ट के पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं से कहा की सभी कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित होकर ब्रहमलीन महराज जी को श्रद्धांजलि देंगे। कहा कि संघठन के संज्ञान में ग्राम वीरापट्टी मोढ में आवादी में लगभग 20 वर्ष से एक ईंट के चवुतरे पर भगवान शिव जी के मूर्ति की पूजा ग्रामीणों द्वारा किया जाता था। कुछ अवांछित द्वारा भदोही एसडीएम को दरखास दिया गया। भदोही एसडीएम के निर्देश पर तहसीलदार प्रशासन लेकर मौके पर पहुंच कर चवुतरा को तोड़वाकर भगवान शिव जी की मूर्ति को उठा ले गये। जिला अध्यक्ष प्रमोद मिश्र ने कहा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री एक संत हैं और संत के शासन में भगवान सुरक्षित नही है।

हाथी घोड़ा पालकी जय कन्हैया लाल की

क्रियायोग आश्रम में क्रियायोग विधि से मनाया जाएगा श्री कृष्ण जन्माष्टमी

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान में कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व क्रियायोग ध्यान के आभामंडल में मनाया गया। कृष्ण जन्माष्टमी मनाने का प्रमुख लक्ष्य कंस भाव का कृष्ण भाव में रूपांतरण, क्रियायोग ध्यान की गहराई में उतरने पर कंस शब्द के अंदर छिपे ज्ञान का अनुभव होता है। कंस शब्द 'कं' व 'स' से मिलकर बना है। 'कं' का अभिप्राय कर्म की निरंतरता से है। ' स' का अभिप्राय (जीवन) से है। जब मनुष्य कर्म की निरंतरता को प्रथम वरीयता देता है और जीवन को द्वितीय तो वह शारीरिक बीमारियां मानसिक अशांति एवं अज्ञानता के विभिन्न स्वरूप में उलझ जाता है। भगवान श्री कृष्ण ने शिक्षा दिया है कि कर्म करने का लक्ष्य जीवन की अनुभूति और जीवन के विस्तार से है।

जब यह लक्ष्य मानकर कर्म किया जाता है, तो कर्म करने से मानव अस्तित्व योग अवस्था की ओर अग्रषित होता है। जीवन की अनुभूति के पूर्णता में पहुंचने पर मनुष्य द्वारा किया हुआ कर्म ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव द्वारा किए कर्म के समान हो जाता है। भगवान श्री कृष्ण ने कंस को मारा नहीं था बल्कि कंस को सर्वव्यापी विष्णु शक्ति से संयुक्त कर दिया था। क्रियायोग ध्यान से अपने अंदर कंस चैतन्य को कृष्ण चैतन्य में रूपांतरित करें।

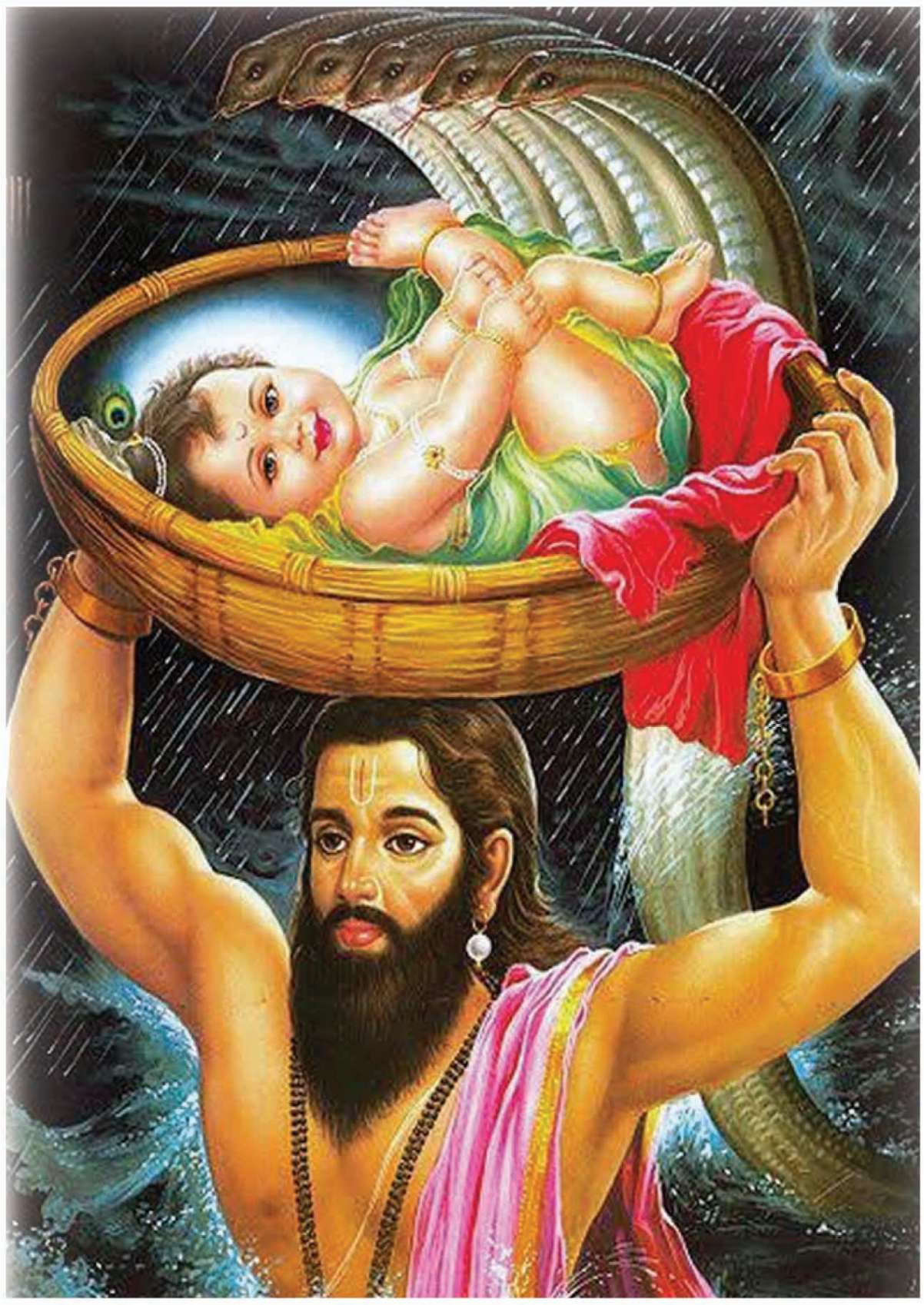

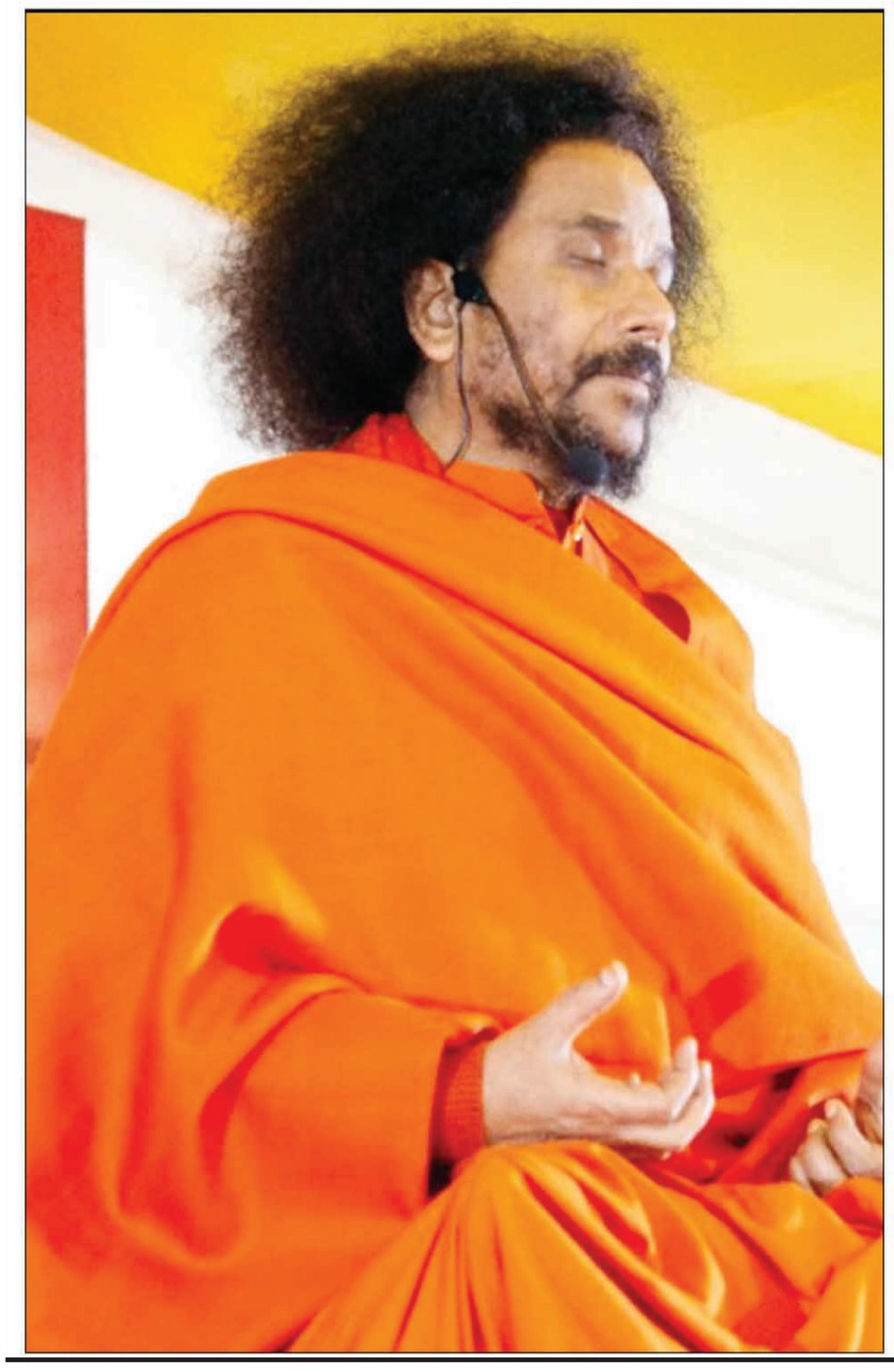

क्रियायोग का विस्तार भारतवर्ष का निर्माण

भारतवर्ष के राजनीतिक शैक्षिक और सामाजिक पर्यावरण को चिर आनंद के आभामंडल में ज्ञानयुक्त व शक्तियुक्त करने के लिए क्रियायोग का विस्तार सबसे महत्वपूर्ण और पावन कर्म है। जैसे-जैसे क्रियायोग का विस्तार होगा, वैसे- वैसे राजा, राजनीति, राजधर्म आदि के विषय में जनता को सम्यक ज्ञान होगा और राष्ट्र की सभी प्रकार की समस्याएं आसानी से दूर हो जाएगी। विश्व के सभी मानव के अंदर जागृत चेतना निरंतर क्रियायोग विज्ञान की ओर बढ़ रही है। भविष्य में मनुष्य की सभी प्रकार की समस्याओं का निराकरण आसानी से संभव होगा। लड़ाई झगड़े कम होते जाएंगे, गरीबी मिटती जाएगी। आपस में प्रेम भाव बढ़ता जाएगा, सभी प्रकार की आवश्यक सुविधाएं सभी को प्राप्त होगी।

Real Aim of Janamashtami : Be reborn with living with Krishna-Consciousness.

Living with Krishna-consciousness means to perform all activities with true idea, thought and concept for providing the best services to all creations of Cosmos. God has become all creations of Cosmos. While beholding this thought, perform all works and duties of life. This is also known as the practice of Kriyayoga meditation. Then, one will realize true peace, health and prosperity.

सम्पादकीय

यह तो नाइंसाफी है!

देश भर की जिला अदालतों और निचली अदालतों में 3.9 करोड़ मामले लंबित हैं। हाईकोर्टों में 58.5 लाख और सुप्रीम कोर्ट में 69000 मामले लंबित हैं। इसकी एक बड़ी वजह जजों की कमी भी है। सुप्रीम कोर्ट में दायर एक याचिका पर सुनवाई के क्रम में उत्तर प्रदेश की अदालतों में लंबित पड़े मामलों की जो तस्वीर उभरी है, उसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। इससे पता चलता है कि यूपी में किसी निचली अदालत द्वारा किसी आपराधिक मामले में दोषी करार दिया गया कोई व्यक्ति अगर हाईकोर्ट में अपील करता है, तो उसे इंसाफ के लिए औसतन 35 साल इंतजार करना पड़ता है। यानी अगर किसी पर गंभीर धाराओं के अपराध दर्ज हैं, जिनमें जमानत मिलना मुश्किल होता है तो बहुत संभव है उसे फैसला आने से पहले बरसों बरस जेल में ही बिताना पड़ जाए। यह मामला दरअसल सुप्रीम कोर्ट पास कई याचिकाओं के रूप में आया, जिनमें अदालत से गुहार लगाई गई थी कि वह दखल देकर बरसों से (कई मामलों में तो 14 बरस से भी ज्यादा) जेल में पड़े सुनवाई का इंतजार कर रहे कैदियों को जमानत देने की राह खोले। सुप्रीम कोर्ट के सामने रखे गए तथ्यों से साफ होता है कि हाईकोर्ट की इलाहाबाद और लखनऊ बेंचों के पास इस समय 1,83000 आपराधिक अपीलें लंबित हैं। पिछले पांच वर्षों में कोर्ट ने 16,279 आपराधिक अपीलें निपटाई हैं, लेकिन इसी अवधि में 41,151 नए अपीलीय मामले आ गए हैं।

आपराधिक अपीलीय मामले निपटाने की कोर्ट की रफ्तार 18 फीसदी बताई जाती है। इस मामले में भले बात सिर्फ उत्तर प्रदेश की अदालतों की हो रही हो, देश के अन्य राज्यों में भी कोई बेहतर हालात नहीं हैं। उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक देश भर की जिला अदालतों और निचली अदालतों में 3.9 करोड़ मामले लंबित हैं। हाईकोर्टों में 58.5 लाख और सुप्रीम कोर्ट में 69000 मामले लंबित हैं। इसकी एक बड़ी वजह जजों की कमी भी है। इलाहाबाद हाई कोर्ट की ही बात करें तो यहां जजों के कुल 67 पद खाली पड़े हुए हैं। ऐसा ही अन्य कोर्टों में भी है। इन पदों को जल्द से जल्द भरने का इंतजाम भी होना चाहिए, शीघ्र सुनवाई और जल्द फैसले सुनिश्चित करने से जुड़ी अन्य सिफारिशों पर अमल के प्रयास भी साथ-साथ चलने चाहिए, लेकिन इन सबसे पहले जेलों में अपनी सुनवाई का इंतजार कर रहे कैदियों को तत्काल राहत देने की व्यवस्था होनी चाहिए। यूपी सरकार की ओर से इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में कहा गया है कि जघन्य अपराध और आदतन अपराध से जुड़े मामलों को छोड़कर आजीवन कैद के मामले में दस साल और अन्य मामलों में तय सजा की आधी अवधि जेल में गुजार चुके कैदियों को जमानत दी जा सकती है। इस सुझाव पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। यह भी जरूरी है कि राहत देने का ऐसा कोई फॉर्मूला सिर्फ यूपी तक सीमित न रहे। चूंकि समस्या पूरे देश की है, इसलिए इलाज के दायरे में भी पूरे देश को शामिल किया जाना चाहिए।

भारत के कंधों पर हिंदू राष्ट्रवाद का वेताल

सर्वमित्रा सुरजन

किसी महिला के साथ अभद्रता, नाबालिग से छेड़छाड़, फर्जी पहचानपत्र रखना, ये सारे ऐसे अपराध हैं, जिन के लिए भारतीय कानून में धाराएं हैं और दोषियों को सजा देने की व्यवस्था भी है। लेकिन इन धाराओं में या न्याय-व्यवस्था में यह कहीं भी वर्णित नहीं है कि इस तरह के अपराधों पर जुर्म साबित होने से पहले ही सजा दी जाए और भीड़ खुद तय करे कि अपराधी कौन है और क्या सजा देना है। जब भारत के कंधों पर राष्ट्रवाद का वेताल नहीं बैठा था, जब नया भारत बनाने जैसी सनक राजनीति में नहीं घुली थी, जब गलत, अनैतिक कामों को भी न्यू नार्मल के दायरे में रखकर सही बताने की साजिशें शुरु नहीं हुई थीं, जब धर्म परोपकार का जरिया हुआ करता था, राजनीति का नहीं, जब समाज स्मार्ट फोन और तकनीकी के सहारे खुद को स्मार्ट समझने का मुगालता नहीं पाले हुआ था और उसके सरोकार काफी व्यापक थे, तब रिश्ते काफी सहज हुआ करते थे। समाज एक-दूसरे से जुड़ा हुआ था, यह जुड़ाव भावनाओं के अनदेखे तार के कारण हुआ करता था। तब रिक्शावाला, सब्जीवाला, दूधवाला, कपड़े वाला और चूड़ी वाला सभी तरह के मेहनतकश लोग भैया के संबोधन में बंधे हुए थे और मोहल्ले-गलियों में इन संबंधों का बरसों-बरस निर्वाह हुआ करता था। ऐसा नहीं है कि तब अपराध नहीं होते थे या कोई किसी के भरोसे का गलत फायदा नहीं उठाता था। गलत लोग तब भी थे, गलत लोग अब भी हैं। लेकिन उस वक्त इस गलत और सही के बीच सांप्रदायिक राजनीति के लिए जगह नहीं थी।

रबीन्द्रनाथ टैगोर की काबुलीवाला कहानी ही पढ़ लीजिए। मौका है, दस्तूर भी। उस कहानी में गुरुदेव ने अनजाने लोगों से गहरे रिश्ते और उन रिश्तों के बीच आई दूरियों, अविश्वास और फिर मानवीय संबंधों के निर्वाह को बड़ी खूबसूरती से व्यक्त किया है। और इस कहानी को पढ़ने का वक्त न मिले, तो अपने बचपन के दिनों को ही याद कर लीजिए। सबकी यादों में ऐसे किरदार जरूर बसे होंगे, जिनसे आपका कोई सगा संबंध नहीं रहा होगा, लेकिन केवल खरीदार या विक्रेता का रिश्ता भी नहीं रहा होगा। परचून की दुकान पर बैठे भईया सौदा करने आए बच्चे को लाड़ में एक-दो खट्टी-मीठी गोलियां थमा देते थे या रिक्शेवाले यूं ही थोड़ी दूर के लिए अपने रिक्शे पर बच्चों को बिठा लेते थे। मुझे याद है स्कूल से घर के रास्ते में फल और सब्जी लेकर दो बहनें अपने सामान के साथ बैठती थीं, हम कुछ देर के लिए उनकी टोकरियों की रखवाली कर लेते थे और बदले में कभी एकाध अमरूद या ककड़ी वो हमें दे देती थीं। उन लोगों से अरसे बाद मिलने पर भी वे उसी तरह प्यार से मिलती रहीं। ऑनलाइन शापिंग के इस दौर में ऐसा अपनापा मुश्किल है और अगर खरीद-फरोख्त आमने-सामने हो, तब भी परस्पर विश्वास अब लगभग खत्म ही हो गया है। विश्वास की इस खाली जगह को भरने के लिए अब जहर और नफरत से पगी राजनीति आ गई है। इसका एक उदाहरण पिछले दिनों इंदौर में देखने मिला।इंदौर के बाणगंगा इलाके में एक चूड़ीवाले की पिटाई की गई, उसका सामान और पैसे भी छीन लिए गए। इस घटना का एक वीडियो भी बाकायदा वायरल हुआ। जिसमें नजर आ रहा है कि उस युवक से उसका नाम और धर्म पूछकर उसे मारा जा रहा है। तस्लीम नाम के इस लड़के पर तरह-तरह के आरोप लगे हैं। पुलिस ने उस पर पॉक्सो एक्ट के तहत कार्रवाई की है, आरोप है कि उसने एक नाबालिग लड़की के साथ छेड़छाड़ की। हालांकि वीडियो में यही नजर आ रहा है कि कुछ लोग उससे नाम पूछ रहे हैं और उसे हिंदू आबादी वाले क्षेत्र में न आने की धमकी दे रहे हैं। इस घटना पर पुलिस ने पहले कार्रवाई नहीं की, लेकिन बाद में जो एफआईआर दर्ज हुई, उसमें लिखा था, तस्लीम अली जब गोविंद नगर थाना बाणगंगा क्षेत्र में चूड़ियां बेचने गए थे तो 5-6 लोग आए और उनका नाम पूछा और जब उन्होंने नाम बताया तो लोगों ने मारना शुरू कर दिया। उन लोगों ने तस्लीम के पास मौजूद 10,000 रुपये नक़द और मोबाइल फ़ोन भी छीन लिए। इसके साथ ही उनका आधार कार्ड और अन्य दस्तावेज़ भी ले लिए गए। साथ ही लगभग 25,000 हज़ार रुपये का माल जिसमें चूड़ियां शामिल थीं लूट लिया गया। एफआईआर के मुताबिक़ तस्लीम को मज़हब के आधार पर गालियां दी गईं और उन्हें मारा पीटा गया। हालांकि मध्यप्रदेश के गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा ने कहा, वो हिंदू नाम से वहां सामान बेच रहा था। वो दूसरे समुदाय से था। इसी तरह के दो आधार कार्ड भी मिले हैं।किसी महिला के साथ अभद्रता, नाबालिग से छेड़छाड़, फर्जी पहचानपत्र रखना, ये सारे ऐसे अपराध हैं, जिन के लिए भारतीय कानून में धाराएं हैं और दोषियों को सजा देने की व्यवस्था भी है। लेकिन इन धाराओं में या न्याय-व्यवस्था में यह कहीं भी वर्णित नहीं है कि इस तरह के अपराधों पर जुर्म साबित होने से पहले ही सजा दी जाए और भीड़ खुद तय करे कि अपराधी कौन है और क्या सजा देना है। लेकिन जिस तरह तस्लीम के नाम पर राजनैतिक खेल शुरु हुआ है, जिस तरह उसका नाम कुछ बहुसंख्यक लोग उसे घेर कर पूछ रहे हैं, जिस तरह के बयान गृहमंत्री की ओर से आए हैं, वो सब यही साबित करते हैं कि समाज में हिंदू-मुसलमान के बीच नए सिरे से तनाव खड़ा करने की कोशिश हो रही है। इस कोशिश का मकसद क्या है, इसकी पड़ताल होनी चाहिए। अक्सर सांप्रदायिक तनाव तभी कायम किए जाते हैं, जब सरकार को अपनी किसी नाकामी से ध्यान हटवाना होता है, या चुनाव में वोट बटोरना होता है या बुनियादी सवालों से जनता को दूर कर दूसरे मसलों में उलझाना होता है, मीडिया अक्सर इस काम में सरकार का सहायक होता है।तस्लीम अगर तपन होता, क्या तब भी छेड़खानी या दो आधार कार्ड रखने पर भीड़ उसके साथ वैसा ही व्यवहार करती क्या देश के बड़े-बड़े राजनेता तब भी बयानबाजी करने के लिए उछलते फिरते गृहमंत्री का कहना है कि वो हिंदू नाम से सामान बेच रहा था। क्या सरकार ने इस बात की गहराई में जाने की कोशिश की कि आखिर किन कारणों से तस्लीम को नाम या धर्म छिपाने की जरूरत पड़ी। याद कीजिए भाजपा के निजाम में कोरोना काल में भी सांप्रदायिक राजनीति के लिए अवसर तलाश लिए गए और मुस्लिम विक्रेताओं के आर्थिक बहिष्कार की मुहिम चलाई गई थी, क्या ऐसे ही किसी कारण से तस्लीम को अपना धर्म छिपाने की जरूरत तो नहीं पड़ी। और ये किस कानून में लिखा है कि हम अपने धर्म की तख्ती गले में लटकाएं फिरें।हिंदुस्तान के हरेक नागरिक को क्या अपने ही देश में निर्बाध, बेखौफ घूमने की आजादी नहीं होनी चाहिए। आजादी का अमृत महोत्सव मनाने वाले अपनी अंतरात्मा से इस सवाल को पूछें, शायद उन्हें नजर आ जाए कि नया इंडिया बनाते-बनाते हम किस मुकाम पर देश को ले आए हैं। रबीन्द्रनाथ टैगोर ही फिर याद आते हैं- हो चित्त जहां भय-शून्य, माथ हो उन्नत, हो ज्ञान जहां पर मुक्त, खुला यह जग हो, घर की दीवारें बने न कोई कारा, हो जहां सत्य ही स्रोत सभी शब्दों का। क्या ऐसा भारत हम बना पा रहे हैं। या कम से कम बनाने की नीयत दिखला रहे हैं। अभी जिस तरह की घटनाएं हो रही हैं, कम से कम उन्हें देखकर तो ऐसा नहीं लगता।

हमें गर्व हो कि हम भारतीय हैं

गुजरात के उप-मुख्यमंत्री नितिन पटेल ने कल अपने एक भाषण में बड़ी विचारोत्तेजक बहस छेड़ दी। उन्होंने सवाल उठाया कि यदि भारत में हिंदुओं की बहुसंख्या नहीं होती तो क्या होता ? उन्होंने कहा कि यदि वैसा होता तो देश में न कोई धर्म-निरपेक्षता होती, न कानून का राज होता, न संविधान होता और न ही कोई मानव अधिकार होते। पटेल के इस कथत का आंतरिक अर्थ यह हुआ कि भारत हिंदू राष्ट्र है। इसीलिए यह वैसा है जैसा कि ऊपर बताया गया है। इसी कथन का दूसरा पहलू यह है कि दुनिया के जिन राष्ट्रों में दूसरे मजहबियों का बहुमत है, वहां की शासन-व्यवस्थाओं में वे सभी खूबियाँ नदारद हैं, जो भारत में हैं। नहीं, ऐसा नहीं है। यूरोप और अमेरिका जैसे राष्ट्रों में हिंदू बहुसंख्या में नहीं हैं लेकिन उदारता के वहां वे सब लक्षण विद्यमान हैं, जो भारत में हैं। लेकिन पटेल का इशारा कुछ दूसरी तरफ है। उनका असली प्रश्न यह है कि यदि भारत मुस्लिम बहुसंख्यक देश होता तो क्या यहां वे सब स्वतंत्रताएं होतीं जो आज हैं ? उन्होंने साथ-साथ यह भी कह दिया कि भारत के मुसलमान और ईसाई देशभक्त हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है। उनका यह कथन बिल्कुल सही है। मुस्लिम देशों के बारे में उन्होंने जो कहा है, वह बहुत हद तक सही है लेकिन उसके कुछ अपवाद भी हैं। इसमें शक नहीं कि दुनिया के ज्यादातर मुस्लिम देशों में आज हजार-डेढ़ हजार साल पुराने अरबी कानून इस्लाम के नाम पर चल रहे हैं। जो क्रांतिकारी आधुनिकता पैगंबर मोहम्मद खुद लाए थे, गए–बीते अरबी कानूनों और परंपराओं में, उस आधुनिकता की प्रवृत्ति पर आज भी कई इस्लामी देश आँख मूंदे हुए हैं लेकिन मैंने स्वयं अफगानिस्तान, ईरान, दुबई, ईराक और लेबनान जैसे देशों में अब से 50-55 साल पहले अपनी आंखों से देखा है कि उन देशों में कई लोगों की जीवन-पद्धति भारतीय भद्रलोक से भी ज्यादा आधुनिक थी। इन देशों के गैर-इस्लामी लोग कुछ अतियों की शिकायत जरुर करते थे लेकिन कुल मिलाकर वे भारत के अल्पसंख्यकों की तरह खुश दिखाई पड़ते थे। यहां तक कि जिन्ना और भुट्टो के मंत्रिमंडल में कुछ हिंदू भी थे। अफगान बादशाह अमानुल्लाह की सरकार में कई हिंदू काफी बड़े पदों पर रहे हैं। लेकिन यह सच है कि भारत-जैसी धर्म-निरपेक्षता दुनिया में कहीं नहीं रही हैं। स्पेन में महारानी ईसाबेल ने मस्जिदों का और तुर्कों ने गिरजों का क्या हाल किया था ? यूरोप के मध्यकालीन केथोलिक शासकों के जुल्मों की कहानियां रोंगटे खड़े कर देती हैं। हिटलर के राज में यहूदियों का जीवन कितना नारकीय हो गया था ? आज भी चीन के उइगर मुसलमानों, रूस के चेचन्या मुसलमानों और फ्रांस और जापान के विधर्मियों के साथ जैसी निर्मम सख्ती हो रही है, क्या वैसी भारत में हो रही है या कभी हुई है क्या ? शिया ईरान के सुन्नी मुसलमानों, सुन्नी पाकिस्तान के शिया मुसलमानों और सुन्नी अफगानिस्तान के शिया हजाराओं के साथ जैसा व्यवहार होता है क्या हिंदुस्तान के अल्पसंख्यकों के साथ वैसा व्यवहार होता है? हम लोगों को, चाहे हम हिंदू हो, मुसलमान हों, ईसाई हों, हमें गर्व होना चाहिए कि हम भारतीय हैं। **- डॉ. वेदप्रताप वैदिक**

बिहार की राजनीति में बवाल!

जयशंकर गुप्त

बिहार के जनता परिवार में जो कुछ हो रहा है, उसे व्यक्तिवादी और परिवारवादी राजनीति का विद्रूप चेहरा भी कहा जा सकता है। जब किसी बड़े नेता के परिवार के कई सदस्य राजनीति में सक्रिय हो जाते हैं तो आगे चलकर उत्तराधिकारऽ को लेकर उनके बीच राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं हिलोर मारने लगती हैं। इसके बाद शुरू हो जाता है राजनीतिक साजिशों और एक दूसरे को उठाने-गिराने का राजनीतिक खेल। हार की राजनीति और खासतौर से जनता परिवार (अविभाजित जनता पार्टी और जनता दल) के घटक रहे दलों में और इनके नेताओं के परिवार में बवाल सा मचा है। बिहार आंदोलन और जनता परिवार से जुड़े रहे तीन कद्दावर नेताओं-रामविलास पासवान, लालू प्रसाद यादव और नीतीश कुमार के परिवार और पार्टियों की अंदरूनी कलह खुलकर सामने आ गई है। घर को आग लग गई घर के चिराग सेऽ की कहावत को चरितार्थ करते हुए कुछ महीनों पहले पूर्व केंद्रीय मंत्री रामविलास पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी और परिवार उनके अपने चिरागऽ को लेकर दो हिस्सों में बिखर गया और अब पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव का राजनीतिक कुनबा भी उनके बड़े बेटे तेजप्रताप यादव को लेकर उसी राह पर चलते दिख रहा है। वहीं, भाजपा के साथ सरकार साझा कर रहे जनता दल (यू) में भी अंदरखाने शीर्ष पर बैठे नेताओं के बीच रस्साकशी और एक-दूसरे को नीचा दिखाने का राजनीतिक खेल खुलकर सामने आने लगा है। दरअसल, बिहार के जनता परिवार में जो कुछ हो रहा है, उसे व्यक्तिवादी और परिवारवादी राजनीति का विद्रूप चेहरा भी कहा जा सकता है। जब किसी बड़े नेता के परिवार के कई सदस्य राजनीति में सक्रिय हो जाते हैं तो आगे चलकर उत्तराधिकारऽ को लेकर उनके बीच राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं हिलोर मारने लगती हैं। इसके बाद शुरू हो जाता है राजनीतिक साजिशों और एक दूसरे को उठाने-गिराने का राजनीतिक खेल। यह बात स्व.रामविलास पासवान के राजनीतिक कुनबे में भी दिखी जहां उनके अनुज पशुपति कुमार पारस ने केंद्र सरकार में मंत्री बनने के लिए भतीजे चिराग को हाशिए पर डालने में जरा भी संकोच और लिहाज नहीं किया। उन्होंने पार्टी पर भी एक तरह से कब्जा जमा लिया। सांसद चिराग अब अपने वर्चस्व और पिता की राजनीतिक विरासत के लिए चाचा और चचेरे भाई, सांसद प्रिंस राज से लड़ रहे हैं।

इसे विडंबना ही कहेंगे कि एक तरफ जहां लालू प्रसाद बिहार से लेकर केंद्र में भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी भाजपा को मजबूत चुनौती देने के लिए विपक्षी एकजुटता की कवायद में जुटे हैं, वहीं, बिहार में उनके बड़े बेटे, विधायक तेज प्रताप यादव उनके और उनके दूसरे बेटे, विधानसभा में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव और राजद के लिए भी मुसीबत का कारण बन रहे हैं। उन्होंने लालू प्रसाद और तेजस्वी यादव के भी भरोसेमंद प्रदेश राजद के अध्यक्ष जगदानंद सिंह और परोक्ष रूप से तेजस्वी के विरुद्ध भी राजनीतिक युद्धऽ सा छेड़ दिया है। तेज प्रताप को लगता है कि बड़े होने के बावजूद एक साजिश के तहत पार्टी और परिवार में उनका कद छोटा किया जा रहा है। इस बीच उनके कुछ हालिया बयानों को लेकर उनके ऊपर अनुशासनहीनता की तलवार अलग से लटक रही है। उनके लिए सुधर जाने अथवा पार्टी और परिवार से भी बाहर होने का खतरा साफ दिखने लगा है। इस बात के संकेत लालू प्रसाद और तेजस्वी यादव ने भी देना शुरू कर दिया है। हालांकि राजद के कुछ नेताओं को लगता है कि शुरू से ही तेज प्रताप को अनुशासित किया गया होता तो आज यह दिन नहीं देखने पड़ते। दरअसल, लालू प्रसाद के चारा घोटाले में पहली बार जेल जाने के बाद जब उनकी पत्नी राबड़ी देवी मुख्यमंत्री बनीं, उस समय उनके सभी बच्चे छोटे थे। वयस्क होने के बाद उन्हें भी राजनीति में सक्रिय किया गया। बड़ी बेटी मीसा भारती को लोकसभा के दो चुनाव हारने के बाद 2016 में राज्यसभा में भेजा गया। जबकि 2015 के विधानसभा चुनाव के बाद नीतीश कुमार के जद (यू), कांग्रेस और राजद गठबंधन की सरकार बनी तो उसमें उनके छोटे बेटे तेजस्वी यादव को उप मुख्यमंत्री और बड़े बेटे तेज प्रताप को भी स्वास्थ्य मंत्री बनवाया। 2020 के बिहार विधानसभा के चुनाव में तेजस्वी को ही भावी मुख्यमंत्री के रूप में पेश किया गया। तेज प्रताप सार्वजनिक तौर पर भी खुद को कृष्ण और छोटे भाई तेजस्वी यादव को अर्जुन बताते हुए यह कहते नहीं थकते कि तेजस्वी को मुख्यमंत्री बनाना ही उनका राजनीतिक मकसद है। लेकिन अपने आचरण से वह लगातार तेजस्वी और राजद को कमजोर ही करते रहे। पिछले लोकसभा और विधानसभा चुनाव में भी टिकट से वंचित अपने करीबी लोगों को बागी उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़वाकर उन्होंने कई चुनाव क्षेत्रों में राजद की हार में योगदान ही किया। अपनी उल जलूल हरकतों और विवादित बयानबाजियों के कारण पहले भी सुर्खियों में रहे तेज प्रताप ने हाल के दिनों में राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह और तेजस्वी यादव के राजनीतिक सलाहकार संजय यादव के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। तेज प्रताप इससे पहले लालू प्रसाद यादव के दो और वरिष्ठ और भरोसेमंद नेताओं-पूर्व केंद्रीय मंत्री रघुवंश प्रसाद सिंह और पूर्व सांसद, शिवानंद तिवारी के विरुद्ध भी इस तरह की अपमानजनक टिप्पणियां करते रहे हैं। अब तेज प्रताप अपने आलाकमानऽ से जगदानंद के खिलाफ कार्रवाई की मांग पर अड़े हैं और कह रहे हैं कि ऐसा होने तक वह राजद के किसी कार्यक्रम में शामिल नहीं होंगे। जगदानंद के खिलाफ तेज प्रताप की खुन्नस पुरानी है। उन्हें लगता है कि वह उनका राजनीतिक कद छोटा करने में लगे रहने के साथ ही उनकी उपेक्षा करते हैं। उन्हें उस तरह का राजनीतिक भाव नहीं देते जैसा वह तेजस्वी को देते हैं। मसलन, जब वह यानी तेज प्रताप पार्टी मुख्यालय में आते हैं तो प्रदेश अध्यक्ष उनका उस तरह से स्वागत नहीं करते जैसा वह तेजस्वी का करते हैं। वह उनसे फोन पर बात भी नहीं करते और न ही सार्वजनिक कार्यक्रमों में उनकी बातों पर वह ताली ही बजाते हैं। जगदानंद का कहना है कि तेजस्वी यादव संवैधानिक पद पर, नेता विपक्ष हैं और तेजप्रताप केवल विधायक। हम तो प्रोटोकॉल का अनुसरण करते हैं। इस बीच उनके हालिया बयानों ने तेज प्रताप के सिर पर अनुशासनहीनता की तलवार लटका दी है। वह यह समझने में भूल कर बैठे कि जगदानंद सिंह जो भी कर या कह रहे हैं, उसके लिए उन्हें लालू प्रसाद और तेजस्वी से हरी झंडी मिली हुई है। शायद इसलिए भी लालू प्रसाद और तेजस्वी उनके विरुद्ध कुछ नहीं बोल रहे बल्कि संकेतों के जरिए तेजप्रताप को संयमित और अनुशासित रहने की सलाह दे रहे हैं। कहा तो यह भी जा रहा है कि अगर तेज प्रताप अपनी सीमा में नहीं रहे और इसी तरह के उल जलूल बयान देते रहे तो उनके विरुद्ध कार्रवाई भी हो सकती है। लेकिन इसका राजनीतिक नफा-नुकसान किसे होगा! भाजपा और जद (यू) के नेता इसके इंतजार में बैठे हैं। यह बात राजद नेतृत्व को भी पता है। इस बात का आकलन भी हो रहा है कि तेज प्रताप के विरुद्ध कार्रवाई होने और नहीं होने का राजद और परिवार की राजनीतिक सेहत पर क्या असर पड़ेगा। दूसरी तरफ, बिहार में भाजपा के साथ साझा सरकार का नेतृत्व करते हुए भी खुद को असहज महसूस कर रहे जनता दल यू की अंदरूनी कलह भी खुल कर आने लगी है। नीतीश कुमार के खासमखास रहे आरसीपी सिंह के केंद्र में मंत्री बन जाने के बाद उनकी जगह एक और खासमखास रहे सांसद राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए जाने के बाद स्वागत समारोहों के जरिए जनता दल यू की गुटबाजी और नेताओं के अंदरूनी मतभेद खुलकर सामने आने लगे हैं। नीतीश कुमार खामोश हैं। कहा जा रहा है कि इन सब पर 29 अगस्त को जद (यू) की राष्ट्रीय परिषद में वह कुछ बोल सकते हैं।

भागते अफगानियों की भीड़ में घुसे आतंकवादियों को भी विमान में बैठाकर ले आया अमेरिका

नीरज कुमार दुबे

तालिबान के आगे हाथ जोड़ते अमेरिकी नेतृत्व को देखकर राजनीति में उबाल आ गया है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस मुद्दे पर कहा है कि तालिबान के सामने बाइडन ने घुटने टेक दिये हैं और सैनिकों को वापस बुला कर, हजारों अमेरिकियों को मरने के लिए छोड़ दिया है। क्या तालिबान की चेतावनी के आगे झुक गया है अमेरिका क्या जल्दबाजी में आतंकवादियों को अमेरिकी विमानों में बिठा कर अपने देश ले आया है अमेरिका क्या तालिबान से डर कर भाग रही अफगानी जनता के साथ भीड़ में घुसकर आतंकवादी भी पहुँच गये हैं अमेरिका या अन्य विकसित देशों में यह सब सवाल इसलिए उठ खड़े हुए हैं क्योंकि अमेरिका अफगानिस्तान में गलतियां ही गलतियां करता जा रहा है। एक तो राष्ट्रपति जो बाइडन ने दोहराया है कि वह 31 अगस्त तक अफगानिस्तान से अमेरिकी सेना की पूर्ण वापसी के फैसले पर अडिग हैं। हम आपको बता दें कि बाइडन के इस ऐलान से ठीक पहले तालिबान ने चेतावनी दी थी कि अमेरिका द्वारा विमान के जरिये अफगानिस्तान से लोगों को ले जाने की कार्रवाई 31 अगस्त तक खत्म हो जानी चाहिए।

दूसरा अमेरिका ने जिन अफगानिस्तानियों को अब तक वहाँ से निकाला है उनका किसी भी प्रकार का कोई सत्यापन नहीं किया गया और जो लोग अब अमेरिका सहित अन्य देशों में पहुँच चुके हैं उनके बारे में अंदाजा लगाया जा रहा है कि इनमें से कुछ आतंकवादी भी हो सकते हैं जो समय आने पर खतरा बन सकते हैं। अमेरिकी गलतियां यहीं खत्म नहीं होतीं। एक तरह से तालिबान शासन को मान्यता देने की राह पर आगे बढ़ते हुए अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआईए के निदेशक ने काबुल में तालिबान के शीर्ष राजनीतिक नेता से मुलाकात की और लोगों को निकालने के लिए चल रहे अमेरिकी अभियानों में बाधा नहीं पहुँचाने का आग्रह किया। तालिबान के आगे हाथ जोड़ते अमेरिकी नेतृत्व को देखकर वहां की राजनीति में भी उबाल आ गया है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस मुद्दे पर कहा है कि तालिबान के सामने बाइडन ने घुटने टेक दिये हैं और सैनिकों को वापस बुला कर, हजारों अमेरिकियों को मरने के लिए छोड़ दिया है। ट्रंप ने कहा कि हमें पता चला है कि निकाले गए 26,000 लोगों में से केवल चार हजार अमेरिकी थे। ट्रंप ने दावा किया कि तालिबान ने निकासी उड़ानों में सबसे प्रतिभाशाली लोगों को चढ़ने की अनुमति नहीं दी। डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि हम केवल कल्पना कर सकते हैं कि अफगानिस्तान से कितने आतंकवादियों को हवाई मार्ग के जरिए निकाला गया। उन्होंने कहा कि यह एक भयानक विफलता है क्योंकि जिसे लाया गया उसका कोई पुनरीक्षण नहीं किया गया। उन्होंने कहा कि जो बाइडन कितने आतंकवादी अमेरिका लाएंगे हमें नहीं पता।दूसरी ओर, जी-7 के देश भी निराश हैं कि बाइडन ने उनकी यह बात नहीं मानी कि 31 अगस्त के बाद भी अफगानिस्तान में अमेरिकी फौजों को बनाये रखा जाये। इस मुद्दे पर बाइडन का जी-7 देशों के साथ टकराव भी देखने को मिला है। दरअसल अमेरिका के सहयोगी देश इस बात से निराश हैं कि जब अफगानिस्तान में तालिबान के खिलाफ अभियान चलाने की बात आई थी तब अमेरिका के सहयोगी नाटो देशों के सैनिकों ने वहां अमेरिका का पूरा साथ दिया लेकिन अभी अमेरिका के सहयोगी देश अफगानिस्तान से अपने सभी लोगों को पूरी तरह निकाल नहीं पाये हैं, ऐसे में भी अमेरिका वहां अपना अभियान समाप्त करना चाहता है। अमेरिका के सहयोगी देश इस बात को समझ रहे हैं कि अमेरिका के पूरी तरह निकलने के बाद उन लोगों के लिए अपनों को अफगानिस्तान से निकालना बेहद मुश्किल हो जायेगा।

कॉमन रूमः वोडाफोन से कैसे जुड़ी है आपकी जिंदगी

पंकज डोभाल

वोडाफोन आइडिया दिवालिया होने की ओर बढ़ रही है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या सरकार इस कंपनी को बचाएगी मान लें कि वह कंपनी को बचाने का फैसला करती भी है तो क्या एक राहत पैकेज से 1.8 लाख करोड़ के कर्ज तले दबी वोडाफोन आइडिया को बचाना संभव होगा आखिर इसे हर महीने हजारों करोड़ रुपये का घाटा हो रहा है और प्रीमियम ग्राहक भी कंपनी का साथ छोड़ रहे हैं। अगर वोडाफोन आइडिया डूबती है तो सबसे बड़ा नुकसान सरकार को होगा। अनिल अंबानी की कंपनी रिलायंस कम्युनिकेशंस और एयरसेल जब डूबीं तो सरकार उनसे बहुत कम बकाया वसूल कर पाई। वोडाफोन आइडिया पर सरकार का स्पेक्ट्रम का करीब 96 हजार करोड़ रुपये बकाया है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद उस पर एजीआर के मद में देनदारी 61 हजार करोड़ रुपये हो गई है। सरकारी बैंकों को भी उससे करीब 23 हजार करोड़ वसूलने हैं। अगर इसमें बकाया रकम का ब्याज भी जोड़ दिया जाए तो सरकार को कंपनी के डूबने से 2 लाख करोड़ रुपये तक का भारी-भरकम नुकसान हो सकता है।

ऐसे में अगर केंद्र कंपनी को बचाने के लिए नया पैकेज लाता है तो टेलिकॉम उद्योग के लिए 2017 के बाद ऐसी तीसरी राहत होगी। सितंबर 2016 में मुकेश अंबानी के टेलिकॉम क्षेत्र में कदम रखने और प्राइसिंग वॉर शुरू करने के बाद से वोडाफोन आइडिया की कारोबारी और वित्तीय हालत खराब होती गई। अंबानी की कंपनी ने वॉयस कॉल फ्री कर दिया और डेटा भी काफी सस्ता। इससे तब भारती एयरटेल, वोडाफोन इंडिया और आइडिया सेल्युलर को काफी नुकसान हुआ। कारोबारी दबाव बढ़ने के बाद 2018 में वोडाफोन इंडिया और आइडिया का विलय हुआ। जियो के आक्रामक रुख ने पहले तो भारती एयरटेल को भी हिला दिया, लेकिन कंपनी मुश्किल दौर से बाहर निकलने में कामयाब रही। लेकिन आदित्य बिड़ला ग्रुप और वोडाफोन ग्रुप ऐसा कमाल नहीं कर पाया और वोडाफोन आइडिया फिसलती गई, पीछे छूटती गई। इसके लिए कंपनी की खराब बिजनेस रणनीति तो जिम्मेदार है ही, लेकिन टेलिकॉम विभाग ने भी गलतियां कीं। जब जमी-जमाई कंपनियां तेजी से फिसलन की राह पर हों, विभाग को लागत से कम कीमत पर सेवाएं देने के ट्रेंड पर रोक लगानी चाहिए थी। वोडाफोन और आइडिया का जब मर्जर हुआ, तब वह 40 करोड़ ग्राहकों के साथ देश की सबसे बड़ी टेलिकॉम कंपनी थी। आज भी वह 26.8 करोड़ ग्राहकों के साथ तीसरी सबसे बड़ी दूरसंचार कंपनी है। अगर वह दिवालिया होने की अर्जी देती है तो ग्राहकों में जियो या एयरटेल या बीएसएनएल-एमटीएनएल में शिफ्ट होने की आपाधापी मच जाएगी। इससे इन कंपनियों के स्पेक्ट्रम पर दबाव बहुत बढ़ जाएगा और टेलिकॉम सेवाओं की गुणवत्ता खराब होगी। दूसरी तरफ, एक बड़ी कंपनी के बाजार से बाहर होने से कंपनियों को फिर से दरें बढ़ाने का मौका मिल जाएगा। देश में अभी एक औसत ग्राहक 14जीबी डेटा खर्च करता है। इस लिहाज से भारत आज दुनिया की अगली पंक्ति के देशों में शामिल है। इसी वजह से देश में डिजिटल क्रांति शुरू हुई है। अगर डेटा महंगा होता है तो इस पर बुरा असर पड़ेगा।टेलिकॉम क्षेत्र के लिए तीन संभावनाएं है-पहला, वोडाफोन आइडिया और एयरटेल ने कई बार वॉयस और डेटा टैरिफ के लिए'फ्लोर प्राइस'यानी न्यूनतम दरों की मांग की है, लेकिन जियो इससे सहमत नहीं है। इसके बावजूद अगर सरकार न्यूनतम दरें तय करती है तो इससे ग्राहकों का खर्च बढ़ेगा। दूसरा, बीएसएनएल और एमटीएनएल का विलय। दोनों सरकारी कंपनियों को मिलाया गया तो इससे सरकारी खजाने पर दबाव बनेगा क्योंकि हाल में 70 हजार करोड़ के पैकेज के बाद भी ये कंपनियां मुनाफे से दूर हैं। तीसरा, देश के टेलिकॉम मार्केट में एक नई कंपनी के आने की संभावना। वैसे, यह आसान नहीं होगा। अगर कोई कंपनी इस बाजार में कदम रखती है तो उसे भारी-भरकम निवेश करना होगा, जबकि यहां प्रति ग्राहक आमदनी सबसे कम है। स्पेक्ट्रम भी बहुत महंगा है और सरकार को भारी टैक्स चुकाना पड़ता है।

दिल्ली : जन्माष्टमी पर भक्तों के लिए नहीं खुलेंगे मंदिर, गलियों में झांकियां लगाने की भी इजाजत नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोरोना के चलते इस साल भी जन्माष्टमी पर मंदिरों में भक्तों का प्रवेश नहीं होगा। पूजा-अर्चना के लिए मंदिर खोल जरूर दिए गए हैं, लेकिन मंदिरों में भक्तों के प्रवेश की अभी मनाही है। दिल्ली आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, डीडीएमए, की ओर से मंदिर खोलने की अनुमति नहीं दी गई है, जिसके चलते मंदिर बंद रहेंगे। वहीं, भक्तों के मंदिर में नहीं आने के कारण मंदिर समिति भी उस तरह की तैयारियां नहीं कर रही हैं। इस साल मंदिरों के साथ गलियों में भी जन्माष्टमी को लेकर आयोजन नहीं किए जाएंगे। गलियों में हर साल झांकियां सजाई जाती थीं, लेकिन इस साल अनुमति नहीं दी गई जा रही है। मंदिर मार्ग स्थित बिड़ला मंदिर के प्रबंधक विनोद मिश्र ने बताया कि सरकार की ओर से अनुमति नहीं दी गई है। ऐसे में

अब मंदिर के अंदर बड़े स्तर पर तैयारियां नहीं की जा रही हैं। मंदिर में केवल पूजा-अर्चना की जाएगी। इसके लिए मंदिर के अंदर सफाई और भगवान की मूर्तियों को साफ किया जा रहा है। वहीं, भगवान राधा कृष्ण को जयपुर से आए मुकुट से सजाया जाएगा।जन्माष्टमी के मौके पर मंदिर खुलवाने को लेकर इन दिनों धार्मिक समितियां लगातार काम कर रही हैं। मंत्री से लेकर मुख्यमंत्री से इसको लेकर गुहार लगाई जा रही है। साथ ही हाईकोर्ट में भी इसको लेकर याचिका दायर की गई है। समिति के पदाधिकारियों का कहना है कि जब दिल्ली में सब कुछ खुल सकता है तो मंदिर क्यों नहीं। उनका कहना है कि सरकार जब मेट्रो व बसों को सौ फीसद के साथ खुलने की अनुमति दे सकती है तो मंदिरों को क्यों नहीं।

झंडेवाला देवी मंदिर के प्रबंधक रविंद्र गोयल ने बताया कि जन्माष्टमी और नवरात्र के मौके पर ही बड़े स्तर पर ही मंदिर के अंदर तैयारियां की जाती थीं, लेकिन इस साल ऐसा नहीं हो रहा है। इसको लेकर प्रशासनिक अधिकारियों के साथ लगातार बैठक की गई है, जिसमें जल्द खुलवाने की मांग भी की गई है। उन्होंने कहा कि प्रशासनिक अधिकारियों से कहा गया है कि वह शर्तों के साथ भी मंदिर खुलने की अनुमति देंगे तो इस पर काम किया जाएगा।

वहीं, कनाट प्लेस स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर के महंत सुरेश शर्मा ने कहा कि लगातार सरकार के मंत्रियों को पत्र लिखा जा रहा है, ताकि जल्द धार्मिक स्थल खोले जा सकें। उन्होंने कहा कि जब शराब के ठेके खोले जा सकते हैं तो लाखों लोगों की आस्था का केंद्र वाले मंदिर क्यों नहीं खोले जा रहे हैं, जबकि मंदिर के अंदर सभी नियमों का पालन किया जाता है, जिसके बाद भी सरकार इन्हें खोलने की अनुमति नहीं दे रही है। साउथ-ईस्ट दिल्ली के डीसीपी ने लोगों से आग्रह किया है कि वे जन्माष्टमी के मौके पर कोरोना गाइडलाइन का ख्याल रखें। दक्षिणी-पूर्वी दिल्ली के डीसीपी आरपी मीणा ने कहा है कि दिल्ली आपदा प्रबंधन प्राधिकार (डीडीएमए) की गाइडलाइन में किसी भी तरह के धार्मिक आयोजन पर रोक लगाई गई है। इसलिए जन्माष्टमी पर भक्तों को मंदिरों में जाने की अनुमति नहीं होगी। डीसीपी ने लोगों से आग्रह किया है कि वे अपने घरों में इस उत्सव को मनाएं और मंदिरों में इकट्ठा न हों।

केरल में नई मुसीबत, पोस्ट कोविड कॉम्प्लीकेशन से गई 4 बच्चों की जान

नई दिल्ली (एजेंसी)। पिछले कुछ माह से कोरोना की बुरी मार झेल रहे केरल के लिए एक और मुसीबत आ गई है। दरअसल, स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, पिछले पांच महीनों में केरल में लगभग 300 से अधिक बच्चे मल्टी-सिस्टम इंफ्लेमेटरी सिंड्रोम-इन चिल्ड्रन (श्इ-ण्), (एक प्रकार का पोस्ट-कोविड कॉम्प्लीकेशन) से संक्रमित हुए। इनमें से 4 की मौत हो गई। श्इ-ण् केरल के लिए एक नई चिंता के रूप में उभरा है, जहां दो महीने से अधिक समय से कोविड संक्रमणों में तेजी देखी जा रही है। केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने शनिवार को माता-पिता से अपने बच्चों में एमआईएस-सी के लक्षण दिखने पर तत्काल चिकित्सा सहायता लेने को कहा। उन्होंने कहा ठइस बीमारी का इलाज संभव है, लेकिन अगर इसे अनदेखा किया गया, तो यह मुश्किल हो जाएगा। विशेषज्ञों ने कहा कि

एमआईएस-सी उन बच्चों में पोस्ट कोविड बीमारी है जिनमें कोरोना वायरस से उबरने के तीन-चार सप्ताह बाद बुखार, पेट दर्द, आंख लाल होना और मतली के लक्षण सामने आए थे। राज्य के स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, अब तक कोविड -19 से संक्रमित सभी राज्य की आबादी में से 10ज्ञ में 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चे शामिल हैं, जबकि अधिकांश एमआईएस-सी संक्रमित मामले 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में हैं। पहला एमआईएस-सी मामला इस साल मार्च में तिरुवनंतपुरम में सरकारी अस्पताल में रिपोर्ट किया गया था।भारत में कोरोना वायरस की रफ्तार एक बार फिर से डराने लगी है। केरल की वजह से भारत का कोरोना ग्राफ अब भयावह दिखने लगा है।

दुश्मनों की खैर नहीं: वायुसेना में इंसास की जगह लेगी रूसी एके-103 राइफल, खूबियों से है लैस

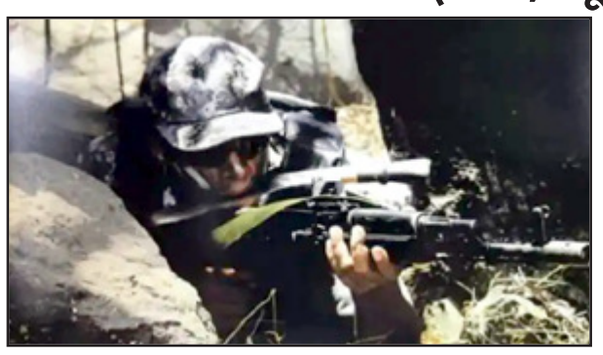

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय वायुसेना ने आपातकालीन खरीदारी के तहत रूस से 70 हजार एके-103 राइफल खरीदने का करार किया है। यह सेना में मौजूद इंसास राइफलों की जगह लेंगी। नई एके-103 राइफलें भारत को अगले कुछ महीनों में मिलने की उम्मीद है। माना जा रहा है कि नए उन्नत हथियार मिलने से वायुसेना की ताकत में बढ़ोतरी होगी और आतंकियों से निपटने में मदद मिलेगी।इंसास राइफल को एके-47 के उन्नत वर्जन एके 103 और एके 203 से बदला जा रहा है। वायुसेना की जरूरत को पूरा करने के लिए 4,000 एसआई सॉर असॉल्ट राइफलों को खरीदने की तैयारी की जा रही है। एलएसी पर चीन से चल रहे विवाद के दौरान भारत ने अमेरिका से भी 1.44 लाख एसआईजी सॉर राइफल इमरजेंसी प्रक्योरमेंट के तहत सीधे खरीदी थीं। हालांकि, एसआईजी सॉर राइफल भारतीय सेना के लिए खरीदी गई थी और इनका इस्तेमाल भारतीय सेना ने शुरू कर दिया है। पाक से लगी एलओसी और चीन से लगी एलएसी, दोनों ही मोर्चों पर तैनात भारतीय सैनिक इन राइफल्स का इस्तेमाल कर रहे हैं। हथियार सबसे पहले जम्मू-कश्मीर, श्रीनगर जैसे संवेदनशील हवाई बेसों के साथ फील्ड एरिया में सैनिकों को मुहैया कराए जाएंगे। धीरे-धीरे उपलब्धता बढ़ने पर अन्य जगह भी यह इंसास राइफल की जगह लेंगी। उन्नत हथियारों की जरूरत भारतीय वायुसेना के अंदर लंबे समय से महसूस की जा रही है। हालांकि इस प्रक्रिया ने 2016 में पठानकोट एयरबेस पर हमले के बाद गति पकड़ी है। वायुसेना अब अपनी तकनीकी क्षमताओं के उपयोग के साथ-साथ अपने सैनिकों की व्यक्तिगत युद्ध क्षमताओं पर भी बहुत जोर दे रही है।

विभिन्न सरकारी अनुमानों के अनुसार, वायुसेना को इस वक्त करीब 1.5 लाख नई असॉल्ट राइफल की दरकार है। इसी को ध्यान में रखते हुए रूस से 70,000 एके-103 असॉल्ट राइफल खरीदने के लिए आपातकालीन प्रावधानों के तहत पिछले सप्ताह लगभग 300 करोड़ रुपये के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए थे।

दिल्ली दंगे : कोर्ट ने की दिल्ली पुलिस की खिंचाई, कहा-

बड़ी संख्या में मामलों में जांच का स्तर 'बहुत घटिया'

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर-पूर्वी दिल्ली दंगों से जुड़े एक मामले की सुनवाई के दौरान अदालत ने दिल्ली पुलिस की जमकर खिंचाई की। कोर्ट ने कहा कि बड़ी संख्या में दिल्ली दंगों के मामलों की जांच का स्तर बहुत घटिया है। इसके साथ ही कोर्ट ने दिल्ली पुलिस कमिश्नर से इसमें दखल देने को कहा है।अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश (एएसजे) विनोद यादव ने 25 फरवरी, 2020 को सांप्रदायिक हिंसा के दौरान पुलिस अधिकारियों पर कथित तौर पर तेजाब, कांच की बोतलों और ईंटों से हमला करने के मामले में एक आरोपी अशरफ अली के खिलाफ आरोप तय करते हुए यह टिप्पणी की। एएसजे ने कहा कि अधिकांश मामलों में जांच अधिकारी (आईओ) अदालत में पेश नहीं होते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि बड़ी संख्या में दंगों के मामलों में जांच का स्तर बहुत खराब है।इसके अलावा, एएसजे यादव ने कहा कि आधी-अधूरी चार्जशीट दाखिल करने के बाद पुलिस शायद ही जांच को तार्किक अंत तक ले जाने की परवाह करती है, जिसके कारण कई मामलों में नामजद आरोपी जेलों में बंद रहते हैं। कोर्ट

ने 28 अगस्त को एक आदेश में उल्लेख किया, ठयह मामला एक ज्वलंत उदाहरण है, जिसमें पीड़ित स्वयं पुलिस कर्मी हैं, फिर भी आईओ ने एसिड का सैंपल एकत्र करने और उसका कैमिकल एनालिसिस करने की जहमत तक नहीं उठाई। जांच अधिकारी ने चोटों की प्रकृति के बारे में राय एकत्र करने की जहमत तक नहीं उठाई।इसके अलावा, न्यायाधीश ने कहा कि दंगा मामले के जांच अधिकारी प्रॉसिक्यूटर्स को आरोपों पर बहस के लिए ब्रीफ नहीं कर रहे हैं और सुनवाई की सुबह उन्हें चार्जशीट की पीडीएफ ई-मेल कर रहे हैं। उन्होंने इस मामले में आदेश की कॉपी दिल्ली पुलिस कमिश्नर को उनके संदर्भ के लिए और सुधारात्मक कदम उठाने के निर्देश के लिए भेजने का भी निर्देश दिया। सत्र न्यायाधीश ने आगे कहा कि यह उचित समय है कि उत्तर-पूर्वी जिले के डीसीपी और अन्य उच्च अधिकारी उनके द्वारा की गई टिप्पणियों पर ध्यान दें और मामलों में आवश्यक सुधारात्मक कार्रवाई करें।

विनोद यादव ने कहा कि वे इस संबंध में विशेषज्ञों की सहायता लेने के लिए स्वतंत्र हैं, ऐसा न करने पर इन मामलों में शामिल व्यक्तियों के साथ अन्याय होने की संभावना है। गौरतलब है कि फरवरी 2020 में उत्तर-पूर्वी दिल्ली में नागरिकता (संशोधन) कानून का समर्थन और विरोध करने वालों के बीच हुए सांप्रदायिक दंगों में कम से कम 53 लोग मारे गए थे और 700 से अधिक घायल हो गए।

'लौटा दो सारा पैसा', अफगानिस्तान के भागे पूर्व राष्ट्रपति अशरफ गनी से बोला तालिबान

नई दिल्ली (एजेंसी)। तालिबान के प्रवक्ता सुहैल शाहीन ने 15 अगस्त के बाद देश में फैली अराजकता के लिए अशरफ गनी को जिम्मेदार ठहराया है। शाहीन ने रविवार को कहा कि पूर्व राष्ट्रपति अशरफ गनी ने अचानक सरकार छोड़ कर गलती की। उन्होंने कहा कि जब तालिबान सत्ता के शांतिपूर्ण

हस्तांतरण की उम्मीद कर रहे थे और लड़ाके काबुल के गेट के बाहर इंतजार कर रहे थे, अशरफ गनी अचानक भाग खड़े हुए हैं। उन्होंने सरकार को छोड़ने की गलती की है। इसी के परिणाम है कि लूटपाट और गोलीबारी हुई। एक न्यूज को दिए एक इंटरव्यू में अशरफ गनी के भारी मात्रा में नकदी के साथ भागने की रिपोर्ट पर सुहैल शाहीन ने कहा कि अगर उन्होंने कुछ भी लिया है जो उनसे संबंधित नहीं है, तो उन्हें उसे अफगानिस्तान को वापस करना होगा। लेकिन तालिबान उनका पीछा करे ऐसी कोई प्राथमिकता नहीं है क्योंकि समूह का ध्यान अब नई सरकार बनाने पर है। बता दें कि अशरफ गनी पैसा लेकर भागने की खबरों का खंडन कर चुके हैं। यूएई में रहते हुए उन्होंने अफगान को संबोधित किया जिसमें उन्होंने कहा कि खून खराबे से बचने के लिए उन्हें देश छोड़ने के लिए मजबूर किया गया। गनी ने कहा कि उनके पास अपनी चप्पल बदलने तक का समय नहीं था। पैसे लेकर जाने का कोई सवाल ही नहीं है। यूएई और गनी के संबंधों पर तालिबान के प्रवक्ता ने कहा कि पूर्व राष्ट्रपति का यूएई के साथ घनिष्ठ संबंध थे।

काबुल में फिर जिस्मों के चीथड़े उड़ाने चले थे फिदायीन, यूएस के रॉकेट ने ऐसा किया हाल

वॉशिंगटन काबुल (एजेंसी)। इस्लामिक स्टेट खुरासान के खूंखार फिदायीन आतंकवादी एक बार फिर जिस्मों के चीथड़े उड़ाने के लिए काबुल एयरपोर्ट की तरफ निकल चुके थे। लेकिन इस बार पहले से अधिक अलर्ट अमेरिका ने रास्ते में ही उनके परखच्चे उड़ा दिए। एक बेहद सटीक एयरस्ट्राइक के जरिए आतंकियों की कार पर रॉकेट दागा गया। बताया जा रहा है कि इसमें कई फिदायीन सवार थे। अमेरिकी सेना ने हमले की पुष्टि करते हुए कहा है कि आत्मरक्षा में किए गए हमले का निशाना सटीक रहा और एयरपोर्ट की ओर बढ़ रहे खतरे को खत्म कर दिया गया।

काबुल में एयरपोर्ट के उत्तरपूर्वी इलाके में रिहायशी इलाके में यह रॉकेट गिरा था। मौके से आईं तस्वीरों में दिख रहा है कि कुछ गाड़ियों के परखच्चे उड़ गए हैं। वहां के कुछ मकानों और पेड़ों को भी नुकसान हुआ है। अमेरिका ने दावा किया है कि हमले में आतंकी मारे गए हैं और उनके कार में विस्फोटक होने की वजह से इसमें भी धमाका हो गया।

अमेरिकी सेना ने रविवार को

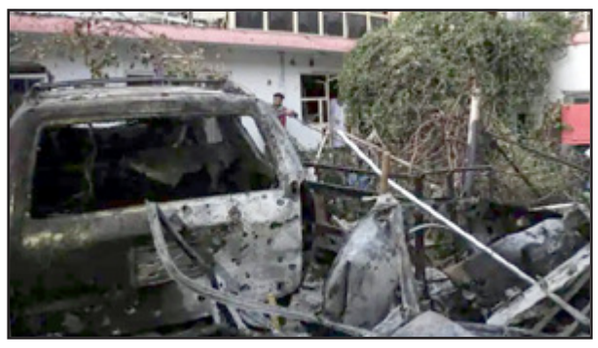

पुष्टि की कि उसने काबुल के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की तरफ जा रहे ''विस्फोटक लदे एक वाहन को निशाना बनाया, जहां अमेरिकी सेना लोगों को सुरक्षित निकालने के अभियान में जुटी हुई है।'' यूएस सेंट्रल कमान के प्रवक्ता कैप्टन बिल अर्बन ने बताया, ''अमेरिकी सैन्य बलों ने काबुल में आत्मरक्षा में एक वाहन पर आज मानव रहित यान (ड्रोन) से हमला किया, जिससे हामिद करजई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए आईएसआईएस-के का आसन्न खतरा टल गया। अर्बन ने कहा, ''हमें विश्वास है कि हम लक्ष्य पर निशाना साधने में सफल रहे। वाहन में काफी विस्फोटक सामग्री होने का संकेत मिला था।'' अमेरिका नागरिकों के हताहत होने की संभावनाओं का आकलन कर रहा है, हालांकि फिलहाल इसके कोई संकेत नहीं हैं। अर्बन ने एक बयान में कहा, ''भविष्य में संभावित खतरों के प्रति हम सतर्क हैं। इससे पहले, तालिबान के एक प्रवक्ता ने अफगानिस्तान में पत्रकारों को एक संदेश में कहा कि अमेरिकी हमले ने एक आत्मघाती हमलावर को निशाना बनाया, क्योंकि वह विस्फोटकों से लदा वाहन चला रहा था।

काबुल में अमेरिका ने दागा रॉकेट, एयरपोर्ट पर हमला करने जा रहे आईएसआईएस खुरासान के फिदायीन निशाना

वॉशिंगटन काबुल (एजेंसी)। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में रविवार को एक और धमाके ने सनसनी फैल गई। शुरुआत में इसे आतंकी हमला समझा गया, लेकिन अमेरिका ने कि यह उनका सैन्य अभियान था। अधिकारियों ने बताया कि अमेरिका ने इस्लामिक स्टेट के खुरासान मॉड्यूल के आतंकवादियों को निशाना बनाया है। सेना ने इसे आत्मरक्षा में किया गया हमला बताया है।इससे पहले न्यूज एजेंसी एपी ने अमेरिकी अधिकारियों के हवाले से कहा है कि यह रॉकेट उस गाड़ी पर दागा गया जिसमें इस्लामिक स्टेट के कई फिदायीन हमलावर थे और काबुल एयरपोर्ट पर अमेरिकी नागरिकों पर हमला करने वाले थे। तालिबान ने भी यही कहा है। अधिकारियों ने बताया कि इस्लामिक स्टेट

खुरासान के आतंकी को निशाना बनाने के लिए रॉकेट दागा गया, यह आतंकी संगठन पश्चिमी देशों और तालिबान दोनों का दुश्मन है और गुरुवार को एयरपोर्ट के पास हुए हमले का जिम्मेदार है। उस फिदायीन हमले में 13 अमेरिकी सैनिक के अलावा 150 से अधिक लोग मारे गए।

अमेरिकी अधिकारियों ने कहा कि वह शुरुआती जानकारी दे रहे हैं और इसमें कुछ बदलाव हो सकता है। सोशल मीडिया पर सामने आए फुटेज में दिख रहा है कि एक रिहायशी इलाके में मकानों के ऊपर काला धुआं उठ रहा है। लोग गलियों में भागते हुए दिख रहे हैं। अमेरिका ने यह हमला ऐसे समय पर किया जब उसके सैनिक और नागरिक अब भी काबुल में मौजूद हैं, जो 31 अगस्त तक वहां से निकल जाएंगे। 15 अगस्त को काबुल पर तालिबान के कब्जे के साथ ही भारत सहित अधिकतर देशों ने वहां अपने दूतावास को बंद कर दिया और नागरिकों की वापसी शुरू कर दी।

सिल्वर मेडल जीतने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की भाविनाबेन पटेल से बात, कहा- आपने इतिहास रचा है

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय खेल दिवस के मौके पर टोक्यो में खेले जा रहे पैरालंपिक में भाविनाबेन पटेल ने देश को टेबल टेनिस में पहला मेडल दिलाया है। फाइनल मुकाबले में भाविना को चीन की खिलाड़ी यिंग झोऊ के हाथों 0-3 से हार का सामना करके सिल्वर मेडल से संतोष करना पड़ा। फाइनल में हार के बावजूद भाविका ने अपने खेल से सभी का दिल जीत लिया है और हर तरफ उनकी जमकर प्रशंसा हो रही है। पैरालंपिक में सिल्वर मेडल जीतने पर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाविना को उनकी इस उपलब्धि के लिए फोन पर बधाई दी। पीएम ने भाविना की तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने इतिहास रचा है।

प्रधानमंत्री ने भाविना के उज्जवल भविष्य की कामना की।

देश को सिल्वर मेडल दिलाने वालीं भाविना गुजरात के मेहसाणा वडनगर के गांव सुंधिया से ताल्लुक रखती हैं। पीएम ने उनको बताया कि वह कुछ समय सुंधिया में रहे थे और उन्होंने भाविना से पूछा कि उनकी फैमिली में अब वहां पर कौन-कौन बचा है। जिसका जवाब में भाविना ने कहा कि उनके माता-पिता अभी सुंधिया में ही रहते हैं। भाविना की जीत पर इससे पहले मोदी ने ट्वीट करके भी उनकी बधाई दी। उन्होंने लिखा, ' उत्कृष्ट भाविना पटेल ने इतिहास रचा है। उन्होंने देश को ऐतिहासिक सिल्वर मेडल दिलाया है। इसके लिए उनको बहुत बधाई हो। उनकी जिंदगी की यात्रा काफी प्रेरणादायक रही है और उनकी कहानी युवा पीढ़ी को खेल के प्रति आकर्षित करेगी।'

34 वर्षीय भाविना ने पैरालंपिक खेलों में शानदार प्रदर्शन किया और शनिवार को समेफाइनल मुकाबले में दुनिया की तीसरे नंबर की खिलाड़ी को 7-11, 11-7, 11-4, 9-11, 11-8 से हराकर भारतीय खेमे में भी सभी को चौंका दिया था। भाविना हालांकि फाइनल मैच में यह लय नहीं दिखा पाईं और झोउ के खिलाफ गोल्ड मेडल मैच 19 मिनट में ही गंवा दिया। इस मेडल के साथ टोक्यो पैरालंपिक गेम्स में भारत का खाता भी खुल गया। टोक्यो ओलंपिक गेम्स में भी भारत का खाता सिल्वर मेडल से ही खुला था और तब भी महिला एथलीट ने ही भारत का खाता खोला था। टोक्यो ओलंपिक में वेटलिफ्टर मीराबाई चानू ने सिल्वर मेडल जीता था, जो भारत का इन खेलों में पहला मेडल था।

हाई जंप में निषाद कुमार का कमाल, देश को दिलाया दूसरा सिल्वर मेडल

नई दिल्ली (एजेंसी)। टोक्यो पैरालंपिक में भारत के एथलीट निषाद कुमार ने देश को पुरुष हाई जंप में दूसरा मेडल दिला दिया है। निषाद ने 2.06 मीटर की ऊंची जंप लगाकर सिल्वर मेडल को अपने नाम किया। निषाद ने मेडल पर कब्जा करने के साथ ही नया एशियाई रिकॉर्ड भी कायम कर दिया है। इससे पहले सुबह टेबल टेनिस में भाविना पटेल ने भारत का पैरालंपिक 2020 में खाता खोला और सिल्वर मेडल पर कब्जा जमाया। हालांकि, उनको फाइनल मुकाबले में चीन की खिलाड़ी यिंग झोऊ के हाथों 0-3 से हार का सामना करना पड़ा और उनका गोल्ड मेडल जीतने का सपना अधूरा रह गया।निषाद शुरुआत से ही बेहतरीन फॉर्म में नजर आए और उन्होंने पहले प्रयास में ही 2.02 मीटर की कूद को पार किया। इसके बाद भारत के इस पैरा एथलीट ने 2.06 मीटर की जंप को दूसरे प्रयास में पार करके

नया एशियाई रिकॉर्ड स्थापित किया। निषाद हालांकि, 2.09 मीटर की जंप को तीनों ही कोशिश में पार करने में असफल रहे, जिसके चलते उनको गोल्ड मेडल जीतने का सपना अधूरा रह गया। निषाद उन खिलाडियों में से एक थे, जिनसे भारत को पैरालंपिक खेलों में मेडल की उम्मीद थी। पैरालंपिक 2020 में भारत ने नाम अब दो मेडल हो गए हैं और दोनों ही सिल्वर हैं।सिल्वर मेडल जीतने पर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत के एथलीट निषाद को ट्वीट कर बधाई दी है। पीएम ने लिखा, 'टोक्यो से और भी खुश करने वाली खबर। काफी प्रसन्न हूं कि निषाद ने पुरुष हाई जंप टी47 में सिल्वर मेडल अपने नाम किया है। वह एक लाजवाब एथलीट हैं और उनके पास कमाल की स्किल्स और लगन है। उनको बहुत बधाई हो।' राष्ट्रीय खेल दिवस के मौके पर देश को एक दिन में दो मेडल दिलाकर भारत के पैरा एथलीट्स ने लोगों को खुशी से झूमने का सुनहरा मौका प्रदान किया है।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं. UPHIN 2001/9025